ओ३म्

ज्ञानरत्नमञ्जूषा

हिन्दीपद्यानुवादेनालङ्कृता

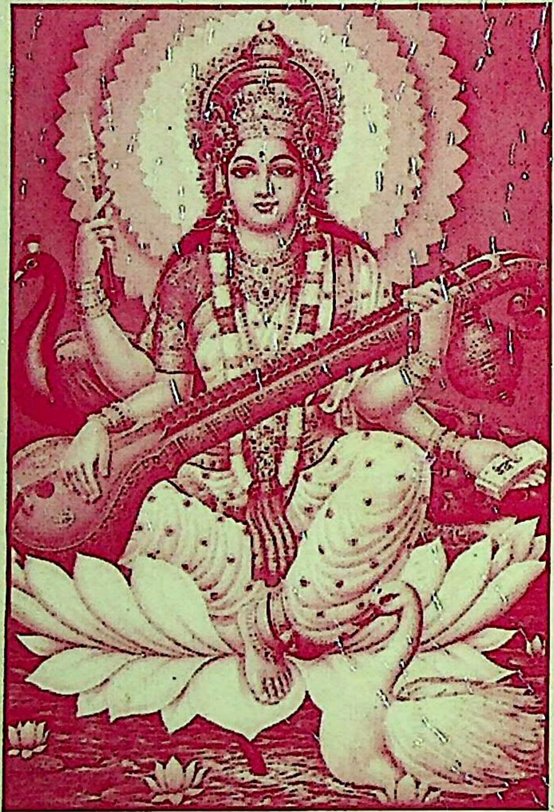

* श्रीवाग्देव्यै नमः *

भारतभूषण-सांघीवालः

ओ३म्

ज्ञानरत्नमञ्जूषा

[हिन्दीपद्यानुवादेनालङ्कृता]

लेखकः सम्पादकस्तथानुवादकश्च

भारतभूषण-सांघीवालः

सरस्वतीसदनम्

८३५/३५, जनता कालोनी, रोहतकनगरम्

(हरयाणाप्रान्तः)

- प्रकाशकः-

सरस्वती सदन

८३५/३५, जनता कालोनी,

रोहतक (हरियाणा)

दूरभाषः ०१२६२-२४९८५१

मो०-९४१६४ ३६७२७

- © सर्वाधिकार लेखकाधीन हैं।

- प्रथम संस्करण-५०० प्रतियाँ

- प्रकाशन वर्ष-श्रावणी पर्व, २०६३ वि०सं० (२००६ ई०)

- मूल्य : १०० रुपये (भारत में)
  ११०० रुपये (विदेश में)

- मुद्रकः-

वेदव्रत शास्त्री

आचार्य प्रिंटिंग प्रेस

गोहानामार्ग, रोहतक-१२४००१

दूरभाषः-०१२६२-२७६८७४, २७७८७४

अनुक्रमणिका

क्र०	विषय	—	पृष्ठसंख्या
१.	कविपरिचय (एक दृष्टि में)	—	४
२.	प्राक्कथनम्	—	६
३.	शिवस्तोत्रम्	—	८
४.	पण्डितमदनमोहन-मालवीयाष्टकम्	—	१७
५.	जनसन्ध्या	—	२०
६.	ईशोपनिषद्	—	३३
७.	प्रश्नोत्तररत्नमाला	—	३९
८.	चर्पटपञ्जरिका	—	६१
९.	द्वादशपञ्जरिका	—	७०
१०.	साधनपञ्चकम्	—	७६
११.	कौपीनपञ्चकम्	—	७९

कवि-परिचय
(एक दृष्टि में)

श्री भारतभूषण सांघीवाल

नाम : भारतभूषण सांघीवाल

जन्मस्थान : ग्राम सांघी, जिला रोहतक (हरियाणा)

सम्प्रति : सरस्वती सदन, ८३५/३५, जनता कालोनी, रोहतक

जन्मतिथि : फाल्गुन कृष्णा अष्टमी सं० १९८८ (२८ फरवरी १९३२ ई०)

पिता का नाम : श्री छोटेलाल 'विद्यासागर'।

माता का नाम : श्रीमती चन्द्रकला देवी।

शिक्षा : शास्त्री, साहित्यरत्न, आयुर्वेदरत्न।

शिक्षणकार्य : ४० साल तक संस्कृत-अध्यापक के रूप में राजकीय सेवा।

साहित्यसेवा : हरियाणवी में ३६, हिन्दी में १०, संस्कृत में ६ पुस्तकों की रचना।

समाजसेवा : सन् १९५५ में ग्राम सांघी में 'समाजसुधार समिति' की स्थापना करके समाजसुधार तथा ग्रामसुधार के कार्यों में बढ़चढ़कर भाग लिया।

देशसेवा : जब-जब देश पर संकट के बादल छाए आपने अपनी लोहलेखनी से अनेक पुस्तकों की रचना की तथा उनको प्रकाशित करके जनताजनार्दन में उनका निश्शुल्क वितरण किया।

सन् १९६५ में भारत-पाक युद्ध के समय स्वरचित 'जय जय हिन्दुस्तान' नाटक का अनेक स्थानों पर मंचन किया और प्राप्त धनराशि रक्षाकोष में दी।

पुरस्कार/सम्मान (१) हरियाणा सरकार द्वारा 'राज्य शिक्षक पुरस्कार'।

(२) भारत सरकार द्वारा 'राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार'।

(३) 'सूरज-चांद' हरियाणवी पुस्तक पर हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा प्रथम पुरस्कार।

(४) संस्कृत पुस्तक 'मङ्गलकलशम्' पर हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा प्रथम पुरस्कार।

(५) हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा सन् २००४ में 'वयोवृद्ध साहित्यकार सम्मान' से अलंकृत होने वाले प्रथम साहित्यकार।

इनके अतिरिक्त अन्य कई संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित।

शोधकार्य: कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र तथा महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सांघीवाल के 'व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पर तथा हिन्दी-संस्कृत-पुस्तकों पर अनेक शोध हुए हैं।

आकाशवाणी तथा दूरदर्शन कार्यक्रम :

सांघीवाल द्वारा रचित ८ संगीत रूपक तथा एकांकियों का आकाशवाणी रोहतक द्वारा प्रसारण हो चुका है। दूरदर्शन जालन्धर तथा हिसार से भी इनके कार्यक्रम प्रसारित हुए हैं।

पाठ्यक्रमों में रचनाएँ :

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र तथा महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की एम०ए०, बी०ए० की परीक्षाओं में सांघीवाल द्वारा रचित गद्यात्मक एवं पद्यात्मक रचनाओं का चयन। इसके अतिरिक्त विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्पादित अनेक काव्यसंकलनों में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी सैकड़ों कविताएँ, लेख, एकांकी आदि प्रकाशित हुए हैं।

श्री भारतभूषण सांघीवाल ने देववाणी संस्कृत, राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा लोकभाषा हरियाणवी तीनों भाषाओं में काव्य-त्रिवेणी प्रवाहित करके साहित्य के द्वारा समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। ये ७५ वर्ष की आयु में भी साहित्यसाधना तथा समाज-सेवा में निरन्तर जुटे हुए हैं। ऐसे महान् साहित्यकार पर समस्त हरयाणा को गर्व है।

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम्॥

राजपण्डित

डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य

अध्यक्ष-संस्कृत सेवा संस्थान

हरिसिंह कालोनी, रोहतक

६-८-२००६ ई०

❋ प्राक्कथन ❋

आनन्दसिन्धो! शिव! दीनबन्धो!
महेश! हे शङ्कर! हे दयालो!।
प्रभो! प्रसादात्तव सज्जनानां
भवन्तु सर्वे सफलाः सुकामाः ॥१॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

आनन्द के सागर! दीनबन्धु!
महेश! हे शङ्कर! हे दयालु!।
तेरी कृपा से सब सज्जनों के
हों सिद्ध सारे शुभकर्म शम्भु!॥१॥

विभिन्नग्रन्थाकरनिस्सृतानि
सज्ज्ञानरत्नानि शुभानि यानि।
तेषामियं कण्ठगता च माला
सुमङ्गला स्यात्प्रियपाठकेभ्यः ॥२॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

विभिन्न ग्रन्थाकर से निकाले
सद्ज्ञान के रत्न सभी निराले।
जो हैं उन्हीं की यह कण्ठमाला
सुमङ्गला हो प्रिय पाठकों को॥२॥

शान्ति-यशोदः सुखदः प्रमोदः
ग्रन्थोऽयमस्य सुधीनिर्मितस्य।
लोकोपकाराय करोमि हिन्द्यां
पद्यानुवादं शिवदं सहर्षम् ॥३॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

आनन्द-शान्ति-सुख-कीर्तिकर्ता
रचा हुआ ग्रन्थ सुधीजनों से।
लोकोपकारार्थ लिखी उसी की
मैंने सुहिन्दीस्थित काव्यटीका॥३॥

पठन्तु सर्वेऽभिरुचिं विधाय
ग्रन्थं शुभं ज्ञानयुतं सुरम्यम्।
मार्गमनुसृत्य यथोक्तमस्मिन्
जनाश्चतुर्वर्गफलं लभन्ते ॥४॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

सभी पढ़ें सज्जन ध्यान दे के
हैं ग्रन्थ बन्धो! यह ज्ञानदिप्तिः।
जो भी चलेंगे इसके दिखाए
सन्मार्ग पे वे फल चार पाएँ ॥४॥

कवित्वशक्तिर्मयि विद्यते न
पारङ्गतो नापि च देववाण्याम्।
तथा स्थितिर्मे कविताप्रयासे
पङ्गोर्यथा पर्वतलङ्घने स्यात् ॥५॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

न दक्ष हूँ मैं कविताकला में
विद्वान भी ना प्रिय बन्धुवों में।
प्रयास तो मैं करता रहा हूँ
कैसे करे पर्वत पार पङ्गु ॥५॥

तथापि मोहान्मम मातृवाण्यां
शिशुप्रयासः कविताविलासे।
विद्वज्जनैः काव्यकलासुदक्षैः
संशोधनीयं स्खलनं मदीयम् ॥६॥

(हिन्दी पद्यानुवाद)

तथापि है मोहविशेष मेरा
हिन्दी तथा संस्कृत में लिखूं मैं।
प्रयास है बालकतुल्य किञ्चित्
विद्वान सन्मार्ग मुझे सुझाएँ ॥६॥

–भारतभूषण सांघीवालः

शिवस्तोत्रम्

✻ ओ३म् नमः शिवाय ✻

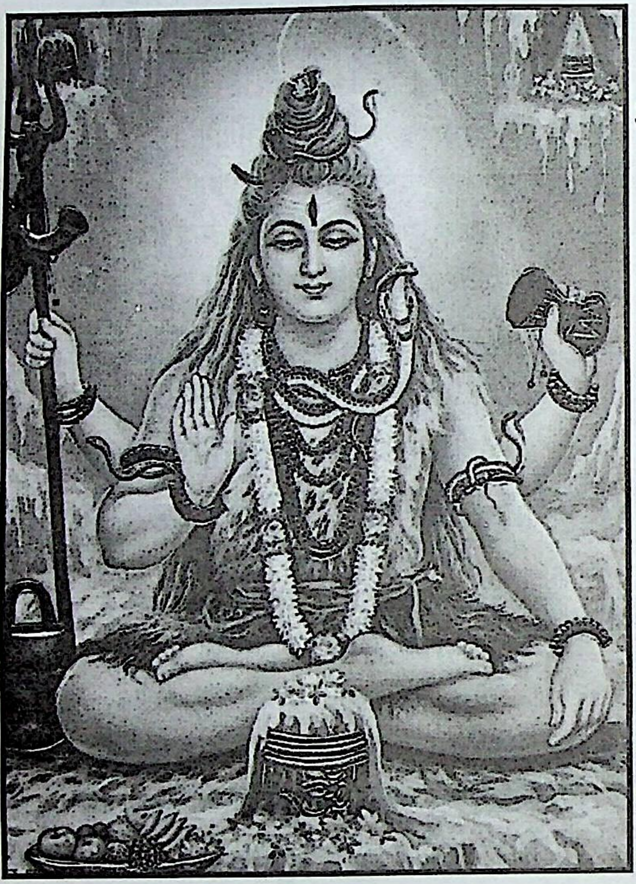

✻ ओ३म् शङ्करो तु शङ्करः ✻

ओ३म् नमः शम्भवाय च

वाग्देवीप्रसादपूतस्यानेकग्रन्थप्रणेतुः सम्प्रति स्वर्गपदं भूषयितुर्विद्यालङ्कारश्रीहजारीलालशास्त्रिणः शुभकामना

आदौ सुनाम्नि श्रीरस्ति यस्य
चान्ते तु नारायण आद्यशक्तिः।
शिवप्रशस्तीति सुपुस्तकस्य
सुलेखकोऽसौ जयतात् सुधीरः ॥१॥

हारीतभूमौ खलु यस्य जन्म
यो भारते भारतभूषणेन।
ख्यातः पदेनेति महान् यशस्वी
समाजकार्ये बहुलब्धकीर्तिः ॥२॥

अनेन नाना वरपुस्तकानि।
हिन्दीतिभाषापरिसंस्कृतानि।
लोकोपकृत्यै बहुमानपूर्वं
विनिर्मितानि हृदयेतिहर्षः ॥३॥

यन्निर्मितो मे शिवस्तोत्रनामा
स्तवो गतो दृष्टिपथं सहर्षम्।
अधीत्य साद्यन्तमहं तु तस्मै
श्री शास्त्रिणे धन्यशतानि कांक्षे ॥४॥

—हजारीलालः शास्त्री

भारतभूषणसांघीवाल इति साहित्यिकनाम्ना प्रसिद्धेन, श्रीनारायणशास्त्रिणा विरचितं, हिन्दीपद्यानुवादेनालङ्कृतं

❋ शिवस्तोत्रम् ❋

(१)

वृषभवाहन ! पापविनाशकं
परमकीर्तिकरं भवतो यशः।
निगदितुं मुनयः स्थगिताः प्रभो!
तव कृपाभिलषन् प्रयते परम्॥

अमर करे जो सुकीर्ति, सब पापों को नष्ट।
ऐसा यश है आपका, हरे सभी वह कष्ट॥
पर उसका कैसे करूँ, वर्णन मैं मतिमन्द।
वृषभवाहन! कह गए, नेति नेति ऋषिवृन्द॥

(२)

चरणयोरनुराग उमापते!
अहह! नोदयति प्रविवर्द्धितः।
तव यशोभिरहं रसनामतो
वरद! पावयितुं शिव! तत्परः॥

बढ़ा हुआ फिर भी प्रभो! चरणों में अनुराग।
करता है प्रेरित मुझे, हे शिव! मेटो दाग॥
तेरे यश-रस से विभो! रसना बने विशुद्ध।
ऐसा वर दो हे वरद! हो यह दास प्रबुद्ध॥

(३)

प्रथमतः प्रणमामि दयानिधे!
अकृतपुण्यनरानतिदुर्लभम्।
गिरिजयाक्षियुगेन विरूपितं
चरणपद्मयुगं गतिदायकम्॥

दर्शन कर जिनके प्रभो! बनें गिरिसुता धन्य।
दुर्लभ पापी मनुज को, तेरे चरण अनन्य॥
दयानिधे! उनको प्रथम, करूँ मैं नमस्कार।
जिनकी सेवा से विभो! खुले मुक्ति का द्वार॥

(४)

गिरिसुताकरसेव्यसुशोभितं
निरूपमं विमलं भयभञ्जनम्।
अघविमोचनमीश! तव प्रभो!
उरुयुगं हि नमामि निरन्तरम्॥

गिरिजा के करयुगल से जो सेवित हैं ईश!
अघभयभञ्जन उरुयुगल हैं तेरे जगदीश॥
नमस्कार उनको करूँ, फिर श्रद्धा के संग।
निरुपम निर्मल जो भरें जीवन में नवरंग॥

(५)

सुवलितं ह्युदरं तव शोभनं
भुजगमालमुरश्च भयङ्करम्।
कटितटञ्च विभूतिविभूषितं
सविनयं हि सदा प्रणमाम्यहम्॥

तेरा सुन्दर उदर है, उर पर पन्नगहार।
भस्मविभूषितकटितटी, सभी को नमस्कार॥

(६)

गजसुतुण्डसुरूपतिरस्कृतं
दिनकरेण समं विमलं शुभम्।
प्रियविपत्तिहरं त्वहिकङ्कणं
भुजयुगं शुभदञ्च नमाम्यहम्॥

करिकर से जो रम्य हैं दिनकर के सम नाथ!
हरें विपत्ति भक्त की तेरे दोनों हाथ॥
जिनमें अहिकंगन पड़ा शुभदायक अभिराम।
उन करकमलों को करूँ कृपानिधान प्रणाम॥

(७)

अतिभयङ्करसर्पसुशोभितं
गरलनीलमहं वृषभध्वज!
विविधरत्नसमूहनिभं तव
वरद! कण्ठमहीश! नमाम्यहम्॥

पन्नग हारों से सजा, विष से नीला रंग।
विविधरत्नसमूह सा, तेरा कण्ठ सुअंग॥
हे अहीश! उस कण्ठ को शत शत करूँ प्रणाम।
जिनके दर्शन से मिले, वरद! मोक्ष का धाम॥

(८)

तिमिरनाशकमीश्वर! मोक्षदं
सकलपापनिपुञ्जविभञ्जकम्।
सुशशिशेखरमाननमण्डलं
मदननाश! नमामि सदा शिवम्॥

तिमिरनाशक मोक्षप्रद करे पापविनाश।
तेरा मुखमण्डल प्रभो! मेटे संकट-त्रास॥
मस्तक पर शोभित शशी, मदननाशक! उमेश!
दर्शनीय मुख को करूँ नमन नाथ! सर्वेश!॥

(९)

प्रदधतीं सुजलामघनाशिनीं
सुरनदीं भव! भक्तिविवर्द्धिनीम्।
सुखकरीञ्च जटां मलहारिणीं
हर! नमामि नमामि पुनः पुनः॥

पापहरा सजला बहे गंगा जहाँ महेश।
सुखदा भक्तिवर्द्धिनी तेरी जटा उमेश!॥
हे हर! मैं उसको करूँ, श्रद्धया नमस्कार।
जिसके दर्शन से प्रभो! हो भवसागर पार॥

(१०)

भव! पिशाचभृतं मदनान्तकं
सकलविघ्नहरं वृषवाहनम्।
करयुगं विनियोज्य सभक्तिको
विनयनम्रमुखः प्रणमाम्यहम्॥

हे पिशाचभृत! विघ्नहर! वृषवाहन! मदनान्त!
हाथ जोड़ तुझ को करूँ नमन नम्र निर्भ्रान्त॥

(११)

मृगसुचर्मधरं करुणाकरं
सुखद! योगरतं परमाद्भुतम्।
परशुसर्पकपालकरं पुनः
तव वपुः प्रणमाम्यघमोचनम्॥

करुणाकर! मृगछाल से सुशोभित तन सुरम्य।
त्रिशूलादि कर में सजे तुम हो दिव्य अगम्य॥
हे सुखदायक! योगरत! हरे पाप-विकार।
तेरे शुद्ध शरीर को सश्रद्ध नमस्कार॥

(१२)

असुरमण्डलमङ्गलभञ्जनं
सकललोकविशोककरं शिवम्।
विभवदं शिवदं प्रियपावनं
शशिधरञ्च सदैव भजाम्यहम्॥

राक्षसकुल के जो हरे मङ्गल-सुख-आनन्द।
शेष सकल संसार के हरे शोक-दुःखद्वन्द्व॥

उस शशिधर शिव को भजूं जो पावन अभिराम।
वैभव-सुख-आनन्द दे स्मरणमात्र से नाम॥

(१३)

त्रिविधतापहरं महिमाद्भुतं
हिमगिरेः सुतया सहितं प्रभुम्।
अनुपमं जगतः पितरं शुभं
शशिधरञ्च सदैव भजाम्यहम्॥

जिसकी महिमा है बड़ी, हरे ताप-आघात।
रहे उमा के संग में प्रभु नाथों का नाथ॥
उस शशिधर शिव को भजूं जो अनुपम जगदीश।
परमपिता सब की करे रक्षा सदा सतीश॥

(१४)

वरविवेकधरं गुणदं हरं
सुरपतिं सुरपूजितविग्रहम्।
मतिमताञ्च वरं गणनायकं
शशिधरञ्च सदैव भजाम्यहम्॥

धरे विवेक गुणगणपति करे विश्वकल्याण।
उस शशिधर शिव को भजूं सुरसेवित भगवान॥

(१५)

षडरिवर्गहरञ्च तमोनुदं
सृजनपालननाशनहेतुकम्।
मदविकारनिवारकमीश्वरं
शशिधरञ्च सदैव भजाम्यहम्॥

काम क्रोध मद आदि का सदा करे जो नाश।
सृजन पालन मरण का रचते हैं इतिहास॥
उस शशिधर शिव को भजूं दूर करे अन्धकार।
परमपिता परमेश है शङ्कर सर्वाधार॥

(१६)

जगति सारमशेषजनेश्वरं
सुखसरोजरविं सकलं शिवम्।
गुणनिधिं विमलं शुभदायकं
शशिधरञ्च सदैव भजाम्यहम्॥

सभी जनों का ईश है और विश्व का सार।
सुख-कमल का सूर्य है महिमा अपरम्पार॥
उस शशिधर शिव को भजूं सकल गुणों की खान।
जो सुखदायक विमल है सच्चा कृपानिधान॥

(१७)

मम गुरुर्जननी च पिता सखा
त्वमहिराज! बलञ्च धनं गुणः।
प्रिय उमेश! शुभं जगदीश्वर!
शिव! शिवाधिपते! सुमतिर्गतिः॥

मात-पिता सद्गुरु सखा, बल धन गुण अहिराज!
मेरा है तू ही प्रभो! गति-मति सब कुछ साज॥

(१८)

यदि मयाज्ञतयाज्ञतया कृतं
किमपि दृष्कृतमीश! निवारय।
कुरु कृपां न पुनर्भवतु प्रभो!
जनक! नायक! पालक! पावन॥

जाने अनजाने किया मैंने कोई पाप।
करो क्षमा उसको प्रभो! दीनदयालो! आप॥
कृपा करो हर गति रहे, सुकर्म में निर्बाध।
आगे मुझ से हो नहीं, कोई भी अपराध॥

(१९)

तव सुतोऽस्मि गुणैश्च बलैर्धिया
सुरपते! रहितोऽत इदं वरम्।
वरद! देहि गुणी बलधीश्वरो
भव! भवेयमहीश! कलापटुः॥

तेरा सुत हूँ सुरपते! गुण-बल-मति से मन्द।
आशुतोष! वर दो खिले गुण-बल-मतिअरविन्द॥
ऐसा भी वर दो मुझे हे वरद! भगवान।
बनूं कलाओं में निपुण दूर हटे अज्ञान॥

(२०)

कुरु कृपां मयि हे जगदीश्वर!
चरणयोरमलं सलिलं तव।
प्रतिदिनं कलुषं हि पुनातु मां
पतितपावन! मङ्गलविग्रह!॥

पावन मङ्गलरूप शिव करो कृपा हे नाथ!
चरणामृत तेरा करे मेरा पावन गात॥

(२१)

देवेशस्य विभोः सुरैर्ऋषिकुलैर्ध्येयस्य मोक्षप्रदं
गन्धर्वैः कविभिश्च वेदनिपुणैर्गेयस्य शुद्धं स्तवम्।
श्रीनारायणशास्त्रिणा विरचितं ये ये पठन्ति प्रिया
भुक्त्वा तेऽत्र सुखं शिवस्य कृपया चान्ते लभन्ते गतिम्॥

सुर ऋषिजन ध्याएँ जिसे, गाएँ कवि-गन्धर्व।
उस शङ्कर देवेश का स्तोत्र शुद्ध है सर्व॥
श्रीनारायण से रचित पढ़ें इसे जो भक्त।
शिवकृपया सुख भोग वे अन्त समय हों मुक्त॥

इति श्रीनारायणशास्त्रिणा विरचितं हिन्दीपद्यानुवादेना-
लङ्कृतं शिवस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

अथ भारतभूषणसांघीवालविरचितं
पण्डितमदनमोहनमालवीयाष्टकम्

(१)

श्रुतिसरोजरवे! करुणाकर !
सुमतिसंस्कृतिकीर्तिधुरन्धर !
गुणगणाधिपते! च विदाम्वर!
मदनमोहन! देव! नमोऽस्तु ते॥

हे करुणाकर! देव! तुम, हो वेदज्ञ महान।
सुबुद्धि-संस्कृति-कीर्ति के दिनकर विद्यावान॥
गुणाधिपति ! हे मदनमोहनमालवीय धीर।
करता हूँ तुम को नमन, श्रद्धापूर्वक वीर॥

(२)

हतधवा सुशिवा निजसंस्कृति
रधनतां विगता शुभसभ्यता।
विलपति प्रभुतेश! सरस्वती
मदनमोहन! ते हि दिवङ्गते॥

विधवा हो गई संस्कृति हुई सभ्यता दीन।
दुखी शारदा जब हुए तुम पञ्चतत्त्वविलीन॥

(३)

अधनदीननृणामिह रञ्जनं
असुरमण्डलमङ्गलभञ्जनम् ।
विवुध ! भारतभूमिसुरक्षणं
मदनमोहन! कोऽत्र करिष्यति॥

रञ्जन दीनों का यहाँ, खलदलमङ्गलघात।
रक्षा भारतभूमि की, कौन करे अब नाथ!॥

हे ऋषिवर! भारतमाता त्वामाह्वयति-

(४)

आतङ्कवादः परितः प्रयाति
भ्रष्टासुरस्यास्ति मुनेऽट्टहासः।
संश्रूयते सज्जनतार्तनादः
शाठ्यञ्च पापं सुरसायतेऽत्र॥

भ्रष्टाचार-आतङ्क औ दुर्जनता-सन्ताप।
सुरसामुखसम बढ़ रहे यहाँ शाठ्य-बहुपाप॥

(५)

कन्यापहारश्च बलाधिकार
निर्दोषहत्यादिकपापभारः।
संवर्धते ह्याह्वयतीह मातृ-
भूस्त्वां महन्! मोहनमालवीय!

बलात्कार अपहरण औ हत्याओं का भार।
बढ़ा, मातृभूमि तुम्हें आओ रही पुकार॥

पण्डितमदनमोहनमालवीयेनोपदिष्टमिदम्-

(६)

हिन्दूयुवानो बलिनः प्रबुद्धा
गोपालका भारतरक्षकाः स्युः।
शिक्षाप्रसारे च कुरीतिनाशे
कृतप्रयासाः सकला भवन्तु॥

बली, गोपाल, मातृभू-रक्षक बनें जवान।
शिक्षा फैलें आपने किया देव! आह्वान॥

(७)

भाषा च भूषाऽपि शुभा स्वकीया
स्वसभ्यतासंस्कृतिरुत्तमा स्वा।
धर्मः स्वकीयः सुखदः सदैव
स्वत्वं हि कल्याणकरं जगत्याम्॥

भाषा भूषा सभ्यता, धर्म संस्कृति आन।
ये सब अपने हैं भले, जन-जन का कल्याण॥

(८)

मृत्तिकापि स्वदेशस्य, नीत्वा गङ्गाजलं तथा।
विदेशं यो गतो वीरो धन्यो मदनमोहनः॥

मिट्टी अपने देश की गङ्गा जल के साथ।
गये विदेश शत-शत तुम्हें धन्यवाद हे नाथ!॥

इति भारतभूषणसांघीवालेन विरचितं
पण्डितमदनमोहनमालवीयाष्टकं सम्पूर्णम्।

✻ ओ३म् ✻

✻ अथ जनसन्ध्या ✻

[हरियाणा प्रचलित, नई तर्ज की कविताओं में]

✻ प्रभु की झंकार ✻

बन्धुवर! ना सन्ध्या के बिन, हो सकता तेरा उद्धार।
इसके बल से ही ऋषियों ने, सुनी मधुर प्रभु की झंकार॥

✻ प्राक्कथन ✻

प्रातः सायं ईश्वर का सम्यक् ध्यान करना हमारा सनातन वैदिक धर्म है। परन्तु आज अधिकतम मनुष्य धर्मविमुख होकर पशुवत् जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अविद्या का साम्राज्य है। संस्कृत के ज्ञाता तो इनेगिने सौभाग्यशाली ही हैं, जो वेदमन्त्रों का शुद्ध उच्चारण कर सकें और उनका आशय समझ सकें। जनसाधारण के लिए ही '**जनसन्ध्या**' की रचना की गई है। इसमें '**सन्ध्या**' के मन्त्रों का ही सार है। नई तर्ज की कविताओं में होने के कारण अल्पशिक्षित एवं अशिक्षित जन भी शीघ्र याद कर सकते हैं। अतः हमें चाहिए कि इस '**जनसन्ध्या**' का अधिकाधिक प्रचार करके पुण्य के भागी बनें।

–भारतभूषण सांघीवाल

❋ सन्ध्या के सम्बन्ध में दो कविताएँ ❋

❋ कविता नं० १ ❋

पाप नष्ट कर मन को शुद्ध बनाती है सन्ध्या।
बल, बुद्धि, गुण, आयु, तेज बढ़ाती है सन्ध्या॥ टेक॥

१. सुबह शाम नित सन्ध्योपासन करना कर्म है।
वेदों के अनुसार यह मानव का धर्म है।
द्विज होकर ना जाना जिसने सन्ध्या मर्म है।
नराधम, चाण्डाल वह पक्का बेशर्म है।

ब्रह्मज्ञान की अनुपम ज्योति जगाती है सन्ध्या।
बल, बुद्धि, गुण, आयु, तेज बढ़ाती है सन्ध्या॥

२. सन्ध्या ही से ऋषि मुनियों ने दीर्घायु पाई।
त्रिकालदर्शी बने जगत में कीर्ति थी छाई।
दिया हमें सन्देश रहो दृढ़ सन्ध्या पर भाई।
आ चरणों पर लेटेंगे सब वैभव सुखदाई।

मुक्ति का पथ अन्त समय दिखलाती है सन्ध्या।
बल, बुद्धि, गुण, आयु, तेज बढ़ाती है सन्ध्या॥

३. शरीर शुद्ध कर, शुद्ध जगह पर, निज आसन लाओ।
विधिपूर्वक, फिर प्रेम सहित, इस सन्ध्या को गाओ।
सारे झंझट दूर हटें मन-वाञ्छित फल पाओ।
करें कृपा की नज़र प्रभु तुम निर्भय हो जाओ।

परमपिता परमेश्वर को हरषाती है सन्ध्या।
बल, बुद्धि, गुण, आयु, तेज बढ़ाती है सन्ध्या॥

४. विप्ररूपी वृक्ष, सन्ध्या मूल कहाती है।
शाखाओं से वेदों की उपमा दी जाती है।

पत्ते-फूल धर्म-कर्मादिक शोभा छाती है।
जड़ की रक्षा करो प्रथम, यह नीति गाती है।

छटा निराली, हरियाली फिर लाती है सन्ध्या।
बल, बुद्धि, गुण, आयु, तेज बढ़ाती है सन्ध्या॥

* कविता नं० २ *

तन जागे अरु मन जागे, हो घट बीच प्रकाश रे....
प्रेम सहित नित्य सन्ध्या कर॥ टेक॥

१. मधुर-मधुर वाणी से अपने प्रीतम के गुण गा।
सन्ध्या, हवन, भजन, सत्संग से उसको नित्य रिझा।
रे बन्दे! प्रभु को नित्य रिझा॥
दुःख भागे, आगे-आगे, सब पापों का हो नाश रे....
प्रेम सहित नित्य सन्ध्या कर॥

२. धर्म कर्म सद्ज्ञान त्रिवेणी की पावन धारा।
जीवन-उपवन को सींचे तब रंग बने न्यारा।
रे मानव! रंग बने न्यारा॥
ऋषि गागे, दुर्गुण त्यागे बिन हो ना आत्मविकास रे....
प्रेम सहित नित्य सन्ध्या कर॥

३. जीवन है अनमोल रतनधन क्यों नाहक खोता?
बुरे कर्म का बुरा नतीजा है "भूषण" होता।
सदा से ही "भूषण" होता॥
यम दागे, लोहगज लागे, हो घोर नरक में वास रे....
प्रेम सहित नित्य सन्ध्या कर॥

✻ ओ३म् ✻

✻ अथ जनसन्ध्या ✻

विधि–प्रातः सूर्योदय से पहले शौच–स्नानादि से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र धारण करे। तदनन्तर एकान्त शुद्ध स्थान में पूर्व की तरफ मुख करके शुद्ध आसन पर बैठ जाए। फिर हाथ जोड़कर एकाग्र मन से नीचे लिखी (नं० १ तथा नं० २) कविताओं द्वारा ईश्वर की आराधना करे।

✻ कविता नं० १ ✻

शुद्ध अशुद्ध किसी भी हालत में चाहे इन्सान हो।
तन मन हो तत्काल शुद्ध जो करता हरि का ध्यान हो॥ टेक॥

१. सर्वव्यापक, सच्चिदानन्द अद्‌भुत रूप निराला है।
जीवनधारिणी धरणी का भी धारण करने वाला है।
तीन लोक नौ खण्ड, भुवन में तेरा प्रभु उजाला है।
सदा सत्य शिव सुन्दर वाञ्छित फल के देने वाला है।

सुख बरसाओ हम पर भी तुम सुख–आनन्द–निधान हो।
तन मन हो तत्काल शुद्ध जो करता हरि का ध्यान हो॥

✻ सन्ध्या–मन्त्राः ✻

४. ओ३म् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

१. ओ३म् पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वञ्च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम्॥

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः॥ (यजुर्वेद अ० ३६। मं० १२)

२. वाणी, प्राण, आँख, कानों की मेरी शक्ति प्रचण्ड हो।
नाभि, हृदय, कण्ठ, शीश में भी वह ज्योति अखण्ड हो।
सुन्दर हों मजबूत अंग सब, पर ना कतई घमंड हो।
शुद्धि की रसधार बहे प्रभु नष्ट दुष्ट सब फंड हों।
प्राणस्वरूप आनन्दरूप तुम शक्तिमान भगवान हो।
तन मन हो तत्काल शुद्ध जो करता हरि का ध्यान हो॥

३. प्रकाशमान! हे ईश्वर! तूने ऋत-सत्य बनाए हैं।
रात रची फिर सुन्दर सागर जल से पूर्ण तराए हैं।
इसके बाद बनाए सम्वत् दिवस-रात रचाए हैं।
सूर्य चन्द्र द्यु पृथ्वी रच कर स्वर्गाकाश सजाए हैं।
अजर, अमर, अविनाशी, ईश्वर सकल गुणों की खान हो।
तन मन हो तत्काल शुद्ध जो करता हरि का ध्यान हो॥

❋ अङ्गस्पर्शमन्त्राः ❋

२. ओ३म् वाक् वाक्। ओ३म् प्राणः प्राणः। ओ३म् चक्षुः चक्षुः। ओ३म् श्रोत्रं श्रोत्रम्। ओ३म् नाभिः। ओ३म् हृदयम्। ओ३म् कण्ठः। ओ३म् शिरः। ओ३म् बाहुभ्यां यशोबलम्। ओ३म् करतलकरपृष्ठे।

❋ मार्जनमन्त्राः ❋

ओं भूः पुनातु शिरसि। ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः। ओं स्वः पुनातु कण्ठे। ओं महः पुनातु हृदये। ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। ओं तपः पुनातु पादयोः। ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र।

❋ अघमर्षणमन्त्राः ❋

३. ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः॥१॥
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी॥२॥
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥३॥

(ऋ० मं० १० सू० १९ मं० १-३)

४. हे सच्चिदानन्द! सभी के कारण तेजस्वरूप तुम्हीं।
दु:खरहित, चराचर जग के कर्ता भर्ता भूप तुम्हीं।
परम तेज का ध्यान करें हम, बुद्धिप्रेरक अनूप तुम्हीं।
व्यापक, प्रकाशरूप हे भगवन्! अमृत के हो कूप तुम्हीं।
"**भारतभूषण**" ओङ्कार के रटने से कल्याण हो।
तन मन हो तत्काल शुद्ध जो करता हरि का ध्यान हो॥

❃ कविता नं० २ ❃

हे भगवन! हे जीवन के धन!
बार-बार नमस्कार, मेरा करदो बेड़ा पार॥ टेक॥

१. हे सर्वज्ञ! स्वतन्त्र देवता! चित्र हृदय में खिंचा हुआ।
सुधासिन्धु! हे रक्षक! तुझसे सकल जगत है सिंचा हुआ।
जीवन देती किरणें जिसकी सूरज तुझ से रचा हुआ।
हैं तेरे उपकार बहुत से ना कोई भी बचा हुआ।
अन्तर्यामी नमस्ते स्वामी,
हम दिल से करें पुकार, मेरा करदो बेड़ा पार।
हे भगवन! हे जीवन के धन! ....।

❃ प्राणायाममन्त्राः ❃

४. ओ३म् भूः। ओ३म् भुवः। ओ३म् स्वः। ओ३म् महः। ओ३म् जनः। ओ३म् तपः। ओ३म् सत्यम्॥

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ (यजु० अ० ३ मं०३५)

ओ३म् आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।

(तैत्तिरीयोपनिषद्)

१. मनसापरिक्रमामन्त्राणां छायानुवाद एव

"हे भगवन्! जीवन के धन!" इत्युपर्युक्तकवितायामङ्कितः। गेयत्वात् महदानन्दसंदोहमनुभविष्यन्त्युपासकाः।

२. आगे-पीछे, दाएँ-बाएँ नीचे ऊपर व्यापक है।
विषजीवों से रक्षा करता, पालक पोषक शासक है।
कुमार्गियों से हमें बचाता सही न्याय-संस्थापक है।
सत्संगति दे ज्ञानदान, अज्ञान-अन्ध का नाशक है।
रुधिर-गति, तुझ से चलती
हो बिजली का सञ्चार, मेरा कर दो बेड़ा पार।
हे भगवन! हे जीवन के धन! ....।

३. हरे हरे सब वृक्ष मनोहर तेरी छटा दिखाते हैं।
सजे हुए फूलों से सुन्दर, लता कुञ्ज हर्षाते हैं।
कलकल करती नदियाँ-झरने तेरे ही गुण गाते हैं।
देख कुदरती दृश्य प्रभु! हम, प्रसन्नचित्त हो जाते हैं।
कृपासिन्धु! हे दीनबन्धु! तुम,
सकल जगत-आधार, मेरा कर दो बेड़ा पार।
हे भगवन! हे जीवन के धन! ....।

४. रिमझिम रिमझिम वर्षा होती, खेती सब हरियाती है।
जगजीवन को बल मिलता है, घटा खुशी की छाती है।
हे भंडारी दाता सबको तेरी ज्योति जगाती है।
वैर-अन्धेरा दूर हटाकर, प्रेम-प्रकाश दिखाती है।
"**भारतभूषण**" मिटते दूषण,
जब हों खुश सिरजनहार, मेरा कर दो बेड़ा पार।
हे भगवन! हे जीवन के धन! ....।

समाप्तिमगात् मनसापरिक्रमामन्त्राणां छायानुवादः।

❁ कविता नं० ३ ❁

क्रोध नियामक देव! महातेजस्वी तेज निराला।
परमपिता तू ही पापों से, रक्षा करने वाला॥ टेक॥

१. शान्त भाव रहे क्रोध से ना मैं पाप कमाऊँ।
नहीं बुराई सोचूं मन से, वाणी मधुर सुनाऊँ।
हाथों पैरों से न किसी को, कभी कष्ट पहुँचाऊँ।
बुरे काम ना करूँ मेढ्र से शुद्ध समय पर खाऊँ।
सब पापों का नाश करे हे देव! तुम्हारी ज्वाला।
परमपिता तू ही पापों से, रक्षा करने वाला॥

२. हे सुखदायक देव! हमें निज रस का स्वाद चखा दे।
सुन्दर शुद्ध निराले अपनेन दर्शन योग्य बना दे।
मेरा मात-पिता है तू ही दुःख की घटा हटा दे।
निर्विकार निर्द्वन्द्व बनूँ ज्योति से ज्योति मिला दे।
जग के बन्धन कटें मिटें दुःख, पिएं रसामृत प्याला।
परमपिता तू ही पापों से, रक्षा करने वाला॥

१. ओ३म् सूर्यश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पदभ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत् किञ्चिद् दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥ (तै०आ०प्र०१० अनु० २५)

❁ मार्जनमन्त्राः ❁

२. ओ३म् आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन महेरणाय चक्षसे। (यजु० अ० ११ मं० ५०)

ओ३म् यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः उशतीरिव मातरः। (यजु० अ० ११ मं० ५१)

ओ३म् तस्मा अरंग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जन यथा च नः। (यजु० अ० ११ मं० ५२)

३. मित्र वरुण अग्नि का मित्र, देवों का बलदाता है-२।
पृथ्वी स्वर्गाकाश आदि में, अपनी ज्योति जगाता है-२।
कितना सुन्दर दिव्य उदय, सबसे उत्तम देव यह,
जड़-चेतन की आत्मा नामी, आश्चर्य यह न्यारा है॥
तेज का भण्डारा है..॥

४. हे जगनेत्र! देवहितैषी! सौ वर्षों तक जिएँ हम-२।
देखें, सुनें, मधुर बोलें प्रभु, स्वस्थ रहें ताजे हरदम-२।
नहीं कभी भी दीन हों, बढ़े उमर ना क्षीण हों,
सत्पथ के हों अनुगामी शुभ आशीर्वाद तुम्हारा है।
तेज का भण्डारा है..॥

❋ उपस्थानमन्त्राः ❋

३. ओ३म् चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳ सूर्य आत्मा जगतस्त-
स्थुषश्च॥३॥ (यजु० अ० १३, मं० ४६)

४. तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम
शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः
स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥४॥
(यजु० अ० ३६, मं० २४)

❃ ईश्वराभिवादन ❃

विधि—उपस्थान के बाद शान्तिपूर्वक आसन पर बैठकर, हाथ जोड़कर नीचे लिखी कविता द्वारा ईश्वर का अभिवादन करें—

❃ कविता नं० ५ ❃

नमस्ते नमस्ते हे कल्याण के कर्ता।
नमस्ते नमस्ते हे त्रिलोक के भर्ता॥ टेक॥

१. हे सच्चिदानन्द ! जगत-उत्पादक ! नमस्ते।
उपासना के योग्य तेज का ध्यान हम धरते।
बुद्धि प्रेरित करते हो तुम संकट के हर्ता॥
नमस्ते नमस्ते हे कल्याण के कर्ता॥

२. काम क्रोध मद लोभ मोह के नाशक! नमस्ते।
न्यायकारी निष्पक्ष हे शासक ! नमस्ते।
हे प्रकाशक! नमस्ते, सुख स्रोत सुख झरता॥
नमस्ते नमस्ते हे कल्याण के कर्ता॥

३. शान्ति-मङ्गल के दाता ! हे शङ्कर! नमस्ते।
आनन्दकर्ता! शिव! शम्भु! परमेश्वर! नमस्ते।
हे संकटहर ! नमस्ते एक तू ही उद्धर्ता।
नमस्ते नमस्ते हे कल्याण के कर्ता॥

❃ गायत्रीमन्त्रः ❃

१. **ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥** (यजु० अ० ३ मं० ३५)

❃ नमस्कारमन्त्रः ❃

२. **ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च
नमः शङ्कराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च॥** (यजु० अ० १६ मं० ४१)

४. दीनबन्धु ! हे स्वामी ! सर्वाधार ! नमस्ते।
गुणागार ! हे सर्वशक्तिभंडार ! नमस्ते।
निर्विकार ! नमस्ते, घट-घट में तू विचरता॥
नमस्ते नमस्ते हे कल्याण के कर्ता॥

५. मेरा माता-पिता भाई-बन्धु तू ही है।
मित्र विद्या धन भी कृपासिन्धु तू ही है।
सब कुछ केन्द्रबिन्दु तू ही देता अमरता।
नमस्ते नमस्ते हे कल्याण के कर्ता॥

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

॥ इति जनसन्ध्या॥

---

५. त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेवः॥

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

॥ इति जनसन्ध्या॥

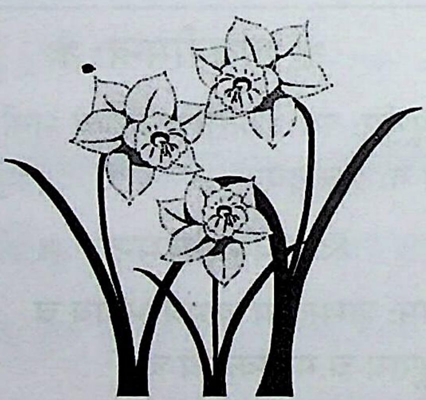

अथ ईशोपनिषद्

हिन्दीपद्यानुवादेनालङ्कृता

*** मन्त्र ***

ओ३म् ईशावास्यमिदꣳ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥१॥

*** हिन्दीपद्यानुवाद ***

आच्छादित जगदीश से, यह सब कुछ जग जान।
तज लालच उपभोग कर, सब कुछ उसका मान॥१॥

*** मन्त्र ***

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳ समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥२॥

*** हिन्दीपद्यानुवाद ***

कर्ता हुआ सुकर्म जन, जीवन में निष्काम।
करे कामना सौ वर्ष, जीने की अविराम॥२॥
कर्म-बन्धनों में न यों, कभी फँसेगा मीत!
अन्य सभी पथ अन्यथा, निहित इसी में जीत॥२क॥

*** मन्त्र ***

असुर्य्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः॥३॥

*** हिन्दीपद्यानुवाद ***

अज्ञानी तम से घिरे, आत्माघाती लोग।
अन्धक लोकों में करें, मर कर वे दुःख भोग॥३॥

✻ मन्त्र ✻

अनेजदेकं मनसो जवीयो
नैनद्देवा आप्नुवन् पूर्वमर्षत्।
तद्धावतोऽन्यानत्येति
तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति ॥४॥

✻ हिन्दीपद्यानुवाद ✻

ब्रह्म अचल है एक रस, मन द्रुतगति है एक।
अलभ्य इन्द्रियों से वह, दिव्य दृष्टि से देख ॥४॥
निश्चल है पर दौड़ है, उसकी तेज सशक्त।
वायु आदि सब गर्भ में, करता कर्म विभक्त ॥४क॥

✻ मन्त्र ✻

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ॥५॥

✻ हिन्दीपद्यानुवाद ✻

अन्दर बाहर ब्रह्म है, दूर वही है पास।
गति देता स्वयं अगतिक, सदानन्द अविनाश ॥५॥

✻ मन्त्र ✻

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥६॥

✻ हिन्दीपद्यानुवाद ✻

जो सबको है देखता, परमेश्वर में व्याप्त।
सब में प्रभु को देखता, वही मनुज है आप्त ॥६॥

❋ मन्त्र ❋

यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः ॥७॥

❋ हिन्दीपद्यानुवाद ❋

जिस रोगी की दृष्टि में, सब जग आत्मस्वरूप।
दुविधा मिटने से हटें, मोह शोक के कूप ॥७॥

❋ मन्त्र ❋

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रण-
मस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतो-
ऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥८॥

❋ हिन्दीपद्यानुवाद ❋

सर्वशक्तिसम्पन्न है, निराकार निष्पाप।
अक्षत, अनादि सब जगह, ब्रह्म रहा है व्याप ॥८॥
सिद्ध मनीषी कवि वही, धरो उसी का ध्यान।
कर्मों के अनुसार फल, पदार्थ करे प्रदान ॥८क॥

❋ मन्त्र ❋

अन्धन्तमः प्रविशन्ति, येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायाꣳ रताः ॥९॥

❋ हिन्दीपद्यानुवाद ❋

अविद्या की उपासना, जो जन करें सकाम।
अन्धकार में भटकते, हैं वे अधम तमाम ॥९॥
विद्या का जो जन करें, तज सुकर्म अभिमान।
घोर तिमिर में दुःख वे, पाते हैं नादान ॥९क॥

❋ मन्त्र ❋

अन्यदेवाहुर्विद्ययान्यदाहुरविद्यया।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥१०॥

❋ हिन्दीपद्यानुवाद ❋

विद्या का फल और है, निर्विद्या का और।
धीर पुरुष उपदेश दें, सुनें सभी कर गौर ॥१०॥
विद्या से परमेश के, दर्शन हों कर ध्यान।
निष्काम शुभकर्म से, होता है कल्याण ॥१०क॥

❋ मन्त्र ❋

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयꣳ सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ॥११॥

❋ हिन्दीपद्यानुवाद ❋

ज्ञान कर्म दोनों रखो, साथ-साथ हे मीत।
मिले अमरता ज्ञान से, कर्म मृत्यु ले जीत ॥११॥

❋ मन्त्र ❋

अन्धन्तमः प्रविशन्ति, ये सम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्याꣳ रताः ॥१२॥

❋ हिन्दीपद्यानुवाद ❋

सत्कर्मों को छोड़कर, करे असत् जो कर्म।
अन्धलोक में जांय वे सत्य न समझें मर्म ॥१२॥
इस नश्वर संसार के, भोगों में अनुरक्त।
डूबें अन्ध समुद्र में, मनुज वासनासक्त ॥१२क॥

*** मन्त्र ***

अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात्।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥१३॥

*** हिन्दीपद्यानुवाद ***

कार्य प्रकृति का अन्य फल, औ कारण का अन्य।
धीर पुरुष उपदेश यह, नित करते हैं धन्य ॥१३॥

*** मन्त्र ***

सम्भूतिं च विनाशं च, यस्तद्वेदोभयꣳ सह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा, सम्भूत्याऽमृतमश्नुते ॥१४॥

*** हिन्दीपद्यानुवाद ***

*सूक्ष्म-स्थूल शरीर और कारण रूप शरीर।
साथ-साथ समझे इन्हें, वही व्यक्ति है धीर ॥१४॥
मनुज कारण शरीर से, करे मृत्यु को पार।
होवे कार्यशरीर से अमर खुले सुख-द्वार ॥१४क॥

*** मन्त्र ***

हिरणमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥१५॥

*** हिन्दीपद्यानुवाद ***

सत्य धर्म का मुख ढका, स्वर्णपात्र के साथ।
दूर हटाओ आवरण, दर्शनार्थ हे नाथ! ॥१५॥

* स्थूल-सूक्ष्म शरीरों की उन्नति से कारण शरीर की और कारण शरीर की उन्नति से कार्य शरीर (स्थूल-सूक्ष्म) की उन्नति सम्भव है। अतः मृत्युबन्धन से छुटकारा पाने के लिए दोनों शरीरों की साथ-साथ उन्नति होनी चाहिए।

❋ मन्त्र ❋

पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह।
तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि योऽसावसौ
पुरुषः सोऽहमस्मि ॥१६॥

❋ हिन्दीपद्यानुवाद ❋

प्रभो ! सर्वपोषक तुम्हीं, न्यायकारी अनूप।
जगन्नियन्ता भी तुम्हीं, तुम्हीं प्रकाशस्वरूप ॥१६॥
दुखद रश्मियाँ दूर कर, देखूँ मङ्गलरूप।
मिले ज्योति में ज्योति अब, सोऽहम् हूँ हे भूप ॥१६क॥

❋ मन्त्र ❋

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तꣳ शरीरम्।
ॐ क्रतो स्मर कृतꣳ स्मर क्रतो स्मर कृतꣳ स्मर ॥१७॥

❋ हिन्दीपद्यानुवाद ❋

जीवात्मा तो अमर है, है भस्मान्त शरीर।
किये कर्मों का ओम् का, करो स्मरण तुम वीर ॥१७॥

❋ मन्त्र ❋

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो
भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥१८॥

❋ हिन्दीपद्यानुवाद ❋

देव आप सर्वज्ञ हैं, हाथ तुम्हारे डोर।
हमें ले चलो सुपथ से, सदानन्द की ओर ॥१८॥
भस्म करो सब पाप हे अग्ने! सर्वाधार।
नमस्कार करते प्रभो! तुम को हम हर बार ॥१८क॥

॥ इति ईशोपनिषद् सम्पूर्णा ॥

श्रीमच्छंकराचार्यप्रणीता

प्रश्नोत्तररत्नमाला

हिन्दीपद्यानुवादेनालङ्कृता

जगद्गुरुः स्वामी शङ्कराचार्यः

॥ ओ३म् ॥

❋ अथ प्रश्नोत्तररत्नमाला ❋

● हिन्दीपद्यानुवादेनालङ्कृता ●

❋ मङ्गलाचरणम् ❋

नत्वा गणेशं शिवमाशुतोषं
सरस्वतीं जाड्यहराञ्च हिन्द्याम्।
प्रश्नोत्तरी शङ्करपुस्तिका या
पद्यानुवादं विदधामि तस्याः॥

❋ हिन्दीपद्यानुवाद ❋

गणेश को शंकर-शारदा को
सश्रद्ध मैंने करके नमस्ते।
प्रश्नोत्तरी शंकर ने लिखी जो
हिन्दी सपद्या उसकी बनाई॥

(१)

कः खलु नालङ्क्रियते दृष्टादृष्टार्थसाधनपटीयान्।
अमुया कण्ठस्थितया प्रश्नोत्तररत्नमालिकया॥

(१)

प्रश्नोत्तर रत्नावली सब साधन की खान।
जिसके हो कण्ठस्थ वह हो शोभित मतिमान॥१॥

(२)

भगवन्किमुपादेयं ? गुरुवचनं, हेयमपि च किमकार्यम्।
को गुरुरधिगततत्त्वः शिष्यहितायोद्यतः सततम्॥

(२)

क्या अपनायें और क्या छोड़ें कहिए मर्म।
गुरु वचन अपनाइए तजिए सब दुष्कर्म॥
कौन गुरु है जगत में कहिए कृपानिधान।
जो तत्त्व को जानता करे शिष्य-कल्याण॥

(३)

त्वरितं किं कर्तव्यं विदुषां ? संसारसन्ततिच्छेदः।
किं मोक्षतरोर्बीजं ? सम्यग् ज्ञानं क्रियासिद्धम्॥

(३)

शीघ्र करें किस कर्म को ज्ञानी चतुर सुजान।
जगत जाल को काटकर करें आत्मकल्याण॥
मोक्षवृक्ष का बीज क्या करिये प्रभो! बखान।
मोक्षवृक्ष का बीज है शुद्ध क्रियात्मक ज्ञान॥

(४)

कः पथ्यतरो धर्मः कः शुचिरिह यस्य मानसं शुद्धम्।
कः पण्डितो विवेकी किं विषमवधीरणा गुरुषु॥

(४)

कौन हितैषी जगत में ? धर्म हितैषी जान।
कौन शुद्ध ? मन शुद्ध हो जिसका उसको मान॥
भू पर पण्डित कौन है ? विवेकशील महान।
विष क्या है संसार में ? गुरुजन का अपमान॥

(५)

किं संसारे सारं ? बहुशोऽपि विचिन्त्यमानमिदमेव।
किं मनुजेष्विष्टतमं ? स्वपरहितायोद्यतं जन्म॥

(५)

सारतत्त्व क्या जगत में ? विविध विचारित ज्ञान।
क्या वाञ्छित ? निज-दूसरों के हित जीवनदान॥

(६)

मदिरेव मोहजनकः कः ? स्नेहः के च दस्यवो ? विषयाः ।
का भव वल्ली ? तृष्णा को वैरी ? यस्त्वनुद्योगः ॥

(६)

मद्य सम मोहजनक क्या ? इस दुनिया से प्यार।
कौन लुटेरे जगत में ? सारे विषय विकार॥
जो बांधे वह बेल क्या ? तृष्णा है वह बेल।
शत्रु कौन ? आलस्य है सभी बिगाड़े खेल॥

(७)

कस्माद् भयमिह मरणादन्धादिहको विशिष्यते रागी।
कः शूरो यो ललनालोचनवाणैर्न च व्यथितः॥

(७)

भय किससे है ? मृत्यु से, अन्धा कौन अभाग ?।
अन्धा वह जिसको यहाँ घेर रहे हैं राग॥
भूमण्डल में कौन है गुरुवर! अनुपम वीर।
घायल जिसे न कर सकें ललना-लोचन-तीर॥

(८)

पातुं कर्णाञ्जलिभिः किममृतमिह युज्यते सदुपदेशः।
किं गुरुताया मूलं यदेतदप्रार्थनं नाम॥

(८)

अमृत है वह कौन-सा जिसे पिएँ दो कान ?
सन्तों का उपदेश है जो मेटे अज्ञान॥
गौरव जिससे ना घटे क्या है इसका मूल ?।
नहीं किसी से मांगना बस है यही असूल॥

(९)

किं गहनं स्त्रीचरितं कश्चतुरो यो न खण्डितस्तेन।
किं दुःखमसन्तोषः किं लाघवमधमतो याञ्चा॥

(९)

गहन विषय क्या जगत में, त्रिया चरित को जान।
चतुर कौन? जो ना फँसे, उसमें वही महान॥
इस भूतल पर दुःख क्या? नहीं रहे सन्तोष।
हल्कापन क्या? नीच से मांगे मन को मोस॥

(१०)

किं जीवितमनवद्यं किं जाड्यं पठितोऽप्यनभ्यासः।
को जागर्ति विवेकी का निद्रा मूढता जन्तोः॥

(१०)

जीवन क्या है हे प्रभो! निन्दा ना हो पास।
जड़ता कहते हैं किसे? पढ़कर ना अभ्यास॥
कौन जागता है यहाँ? विवेकयुत गुणधाम।
निद्रा क्या है हे प्रभो? विमूढता का नाम॥

(११)

नलिनीदलगतजलवत्तरलं किं यौवनं धनं चायुः।
कथय पुनः के शशिनः किरणसमाः सज्जना एव॥

(११)

कमलपत्र पर तरल क्या चंचल बूंद समान।
यौवन दौलत आयु सब अस्थिर हैं यह जान॥
क्या शीतल है चन्द्रमा की किरणों के तुल्य।
शान्तिप्रद शीतल सदा सज्जन संग अमूल्य॥

(१२)

को नरकः परवशता किं सौख्यं सर्वसंगविरतिर्या।

किं पुण्यं भूतहितं प्रियञ्च किं प्राणिनामसवः॥

(१२)

क्या नरक? पराधीनता, सुख? आसक्ति त्याग।

पुण्य? प्राणियों का भला करना हो बेलाग॥

सब से प्यारी चीज क्या जग में कृपानिधान।

जग में प्यारे हैं सदा प्यारे ! अपने प्राण॥

(१३)

कोऽनर्थफलो मानः का सुखदा साधुजनमैत्री।

सर्वव्यसनविनाशे को दक्षः सर्वथा त्यागी॥

(१३)

अनर्थ फल किसका कहो? अहंकार का मान।

कौन यहाँ सुखदायिनी? साधुमित्रता जान॥

सब व्यसनों को छोड़ने में है कौन समर्थ?।

जो त्यागी हो सर्वथा, वही अन्य हैं व्यर्थ॥

(१४)

किं मरणं मूर्खत्वं किञ्चानर्घं यदवसरे दत्तम्।

आमरणात्किं शल्यं प्रच्छन्नं यत्कृतं पापम्॥

(१४)

मृत्यु क्या है? मूर्खता, क्या जगत में अमूल्य।

दिया समय पर दान है उत्तम महा अतुल्य॥

घाव कौनसा ना भरे, मरने तक भी आप?।

इस प्रकार का घाव है किया छुपाकर पाप॥

(१५)

कुत्र विधेयो यत्नो विद्याभ्यासे सदौषधे दाने।

अवधारणा क्व कार्या खलपरयोषित्परधनेषु॥

(१५)

किया जाय किस कार्य में गुरुवर! सतत प्रयास?।
सही दवा लें दान दें, करें सुविद्याभ्यास॥
किन-किन-से बचकर रहें, हमें बचाओ नाथ।
परतिय परधन दुष्ट से सदा बचाओ गात॥

(१६)

काऽहर्निशमनुचिन्त्या संसारासारता न तु प्रमदा।

का प्रेयसी विधेया करुणा दीनेषु सज्जने मैत्री॥

(१६)

क्या सोचें हम रात दिन कहिए कृपानिधान।
असारता संसार की, ना ललना का ध्यान॥
क्या हो मेरी चाहना कृपया कहिए नाथ।
दीनों पर करना दया, मैत्री सज्जन साथ॥

(१७)

कण्ठगतैरप्यसुभिः कस्य ह्यात्मा न शक्यते जेतुम्।

मूर्खस्य शङ्कितस्य च विषादिनो वा कृतघ्नस्य॥

(१७)

मृत्यु पास फिर भी न हो किन-किन का विश्वास?।
विषादी, मूर्ख, संशयी, कृतघ्न करें हताश॥

(१८)

कः साधुः सद्वृत्तः कमधममाचक्षते त्वसद्वृत्तम्।
केन जितं जगदेतत्सत्यतितिक्षावता पुंसा॥

(१८)

साधु कौन? जिसकी रहे वृत्ति अत्यन्त शुद्ध।
दुष्ट कौन? जिसकी सदा वृत्ति धर्मविरुद्ध॥
कौन विजेता जगत का, हे प्रभो! शक्तिमान?।
जो सत्यपथ पर चले, सहनशील महान॥

(१९)

कस्मै नमन्ति देवाः कुर्वन्ति दयाप्रधानाय।
कस्मादुद्वेगः स्यात्संसारारण्यतः सुधियः॥

(१९)

किसके सम्मुख देवता नमन करें महाराज!।
दयावान के सामने झुकता देव समाज॥
कहो, किससे उद्वेग हो मतिमानों को नाथ!।
जग-जंगल से वे रहें समुद्विग्न दिन रात॥

(२०)

कस्य वशे प्राणिगणः सत्यप्रियभाषिणो विनीतस्य।
क्व स्थातव्यं न्याय्ये पथि दृष्टादृष्टार्थलाभाढ्ये॥

(२०)

प्राणी किसके वश रहें जगत में हे अमर्त्य!।
विनयशील के जो सदा, मीठा बोले सत्य॥
सुदृढ़ रहे किस मार्ग पर हे गुरुवर! इन्सान।
सकल लाभयुत न्याय के पथ पर रहे सुजान॥

(२१)

कोऽन्धो योऽकार्यरतः को बधिरो यो न हितानि शृणोति।
को मूको यः काले प्रियाणि वक्तुं न जानाति॥

(२१)

अन्धा कौन? जो नर करे न करने के काम।
बहरा कौन? जो न सुने हितकारी पैगाम॥
भू पर गूंगा कौन है गुरुवर! कहिए खोल?
नहीं समयानुकूल जो बोले मीठे बोल॥

(२२)

किं दानमनाकङ्क्षं किं मित्रं यो न निवारयति पापात्।
कोऽलङ्कारः शीलं किं वाचां मण्डनं सत्यम्॥

(२२)

दान किसे कहते? जहाँ ना बदले की चाह।
मित्र कौन? जो पाप से बचा दिखाये राह॥
अलङ्कार क्या? शील गुण, जिससे सजता शरीर।
वाणी का भूषण कहो? सत्य बोलना वीर॥

(२३)

विद्युद्विलसितचपलं किं दुर्जनसंगतिर्युवतयश्च।
कुलशीलनिष्प्रकम्पाः के कलिकालेऽपि सज्जना एव॥

(२३)

कहो कौन संसार में चपल बिजली समान।
युवती दुष्टजन-संगति, युगल चपल यह जान॥
कुलधर्म और शील पर कलियुग में दृढ़ कौन?
श्रेष्ठ मनुज हैं दृढ़ यहाँ, कभी डिगें ना जौन॥

(२४)

चिन्तामणिरिव दुर्लभमिह किं कथयामि तच्चतुर्भद्रम्।
किं तद्वदन्ति भूयो विधूततमसो विशेषेण॥

(२५)

दानं प्रियवाक्सहितं ज्ञानमगर्वं क्षमान्वितं शौर्यम्।
वित्तं त्यागसमेतं दुर्लभमेतच्चतुर्भद्रम्॥

(२४-२५)

क्या दुर्लभ संसार में चिन्तामणि के तुल्य?
चतुर्भद्र होता सदा दुर्लभ बड़ा अमूल्य॥
चतुर्भद्र क्या? बोलकर मधुर वचन दे दान।
शक्ति होते हुए क्षमा करे मनुज महान॥
भद्र तीसरा ज्ञान हो, पर ना हो अभिमान।
त्यागवृत्ति के साथ धन, चतुर्भद्र ये जान॥

(२६)

किं शोच्यं कार्पण्यं सति विभवे किं प्रशस्तमौदार्यम्।
कः पूज्यो विद्वद्भिः स्वभावतः सर्वदा विनीतो यः॥

(२६)

शोचनीय क्या? कृपणता, जब धन भी हो पास।
प्रशंसनीय क्या है प्रभु! उदारता गुण खास॥
विद्वानों में पूज्य है कौन पुरुष सविशेष?
जो विनीत स्वभाव से, ना घमंड का लेश॥

(२७)

किं कुलकमलदिनेशः सति गुणविभवेऽपि यो नम्रः।
कस्य वशे जगदेतत्प्रियहितवचनस्य धर्मनिरतस्य॥

(२७)

सूर्य कौन कुल कमल का करे सदैव विकास।
गुण-धन रहते नम्र हो वह कुल-दिनकर खास॥
किसके वश में विश्व है? बोले प्रिय हित बोल।
धर्मपरायण जो रहे, उसके वश भूगोल॥

(२८)

विद्वन्मनोहरा का सत्कविता बोधवनिता च।
कं न स्पृशति विपत्तिः प्रवृद्धवचनानुवर्तिनं दान्तम्॥

(२८)

विद्वानों का मनहरण करे कौन गुणधाम।
ज्ञानवती वनिता तथा सत्कविता अभिराम॥
विपत्ति किसके पास ना आती कृपानिधान।
संयम को धारण करे वृद्धों की ले मान॥

(२९)

कस्मै स्पृहयति कमला त्वनलसचित्ताय नीतिवृत्ताय।
त्यजति कं सहसा द्विजगुरुसुरनिन्दाकरञ्च सालस्यम्॥

(२९)

लक्ष्मी किसको चाहती करती कहाँ निवास?
निरालसी नीतिज्ञ के, रहती हरदम पास॥
लक्ष्मी किसको त्यागती? जो आलस से ग्रस्त।
देव विप्र गुरु की करे निन्दा हो मदमस्त॥

(३०)

कुत्र विधेयो वासः सज्जननिकटेऽथवा काश्याम्।
कः परिहार्यो देशः पिशुनयुतो लुब्धभूपश्च॥

(३०)

वास कहाँ पर उचित है? कहिए कृपानिधान।
प्रतिवासी सज्जन जहाँ काशी-सा हो स्थान॥
वास कहाँ पर उचित ना? पड़ौसी चुगलखोर।
लोभी भ्रष्ट नरेश हो, अच्छी ना वह ठौर॥

(३१)

केनाशोच्यः पुरुषः प्रणतकलत्रेण धीरविभवेन।

इह भुवने कः शोच्यः सत्यपि विभवे न दाता॥

(३१)

कौन शोक के योग्य ना? जिसकी पत्नी नम्र।

स्वामी स्थिर सम्पत्ति का, नहीं शोक में व्यग्र॥

कौन शोक के योग्य है? जिसके धन हो पास।

पर फिर भी ना दान दे, वह शोच्य धनदास॥

(३२)

किं लघुताया मूलं प्राकृतपुरुषेषु या याञ्चा।

रामादपि कः शूरः स्मरशरनिहतो न यश्चलितः॥

(३२)

क्या लघुता का मूल है, डालो ईश! प्रकाश।

हल्कापन है मांगना जा नीचों के पास॥

कौन राम से भी अधिक हुआ यहाँ बलवान।

कामदेव के बाण से डिगे न जिसका ध्यान॥

(३३)

किमहर्निशमनुचिन्त्यं भगवच्चरणं न संसारः।

चक्षुष्मन्तोऽप्यन्धाः के स्युर्ये नास्तिका मनुजाः॥

(३३)

किसका हम चिन्तन करें रात दिवस हे नाथ!

हरिचरणों में ध्यान दो, छोड़ो जग की बात॥

आँखों के रहते हुए जग में अन्धा कौन?

ईश्वर को माने नहीं नास्तिक नर है जौन॥

(३४)

कः पङ्गुरिह प्रथितो व्रजति न यो वार्धके तीर्थम्।
किं तीर्थमपि च मुख्यं चित्तमलं यन्निवर्तयति॥

(३४)

लंगड़ा कौन संसार में पड़ा रहे बेकाम।
बूढ़ा होकर भी नहीं करे जो तीर्थ धाम॥
प्रमुख तीर्थ है कहाँ? कहिए कृपानिधान!
मन का मैल कटे जहाँ, सही तीर्थ वह जान॥

(३५)

किं स्मर्तव्यं पुरुषैर्हरिनाम सदा न यावनी भाषा।
को हि न वाच्यः सुधिया परदोषश्चानृतं तद्वत्॥

(३५)

स्मरण करे क्या नित्य जन? प्रेमसहित हरिनाम।
मलेच्छभाषा त्याग दे, मिले शान्ति-आराम॥
कहना अच्छा क्या नहीं बुद्धिमान का नाथ।
दोष पराये और ना बोले मिथ्या बात॥

(३६)

किं संपाद्यं मनुजैर्विद्या वित्तं बलं यशः पुण्यम्।
कः सर्वगुणविनाशी लोभः शत्रुश्च कः कामः॥

(३६)

क्या मनुष्य अर्जित करे? कहिए हे भगवान!
विद्या धन बल पुण्य यश प्राप्त करे मतिमान॥
करे गुणों का नाश क्या? लोभ करे चंडाल।
शत्रु कौन है? काम जो करे हाल बेहाल॥

(३७)

का च सभा परिहार्या हीना या वृद्धसचिवेन।
इह कुत्रावहितः स्यान्मनुजः किल राजसेवायाम्॥

(३७)

किस सभा का चाहिए गुरुवर! करना त्याग।
मन्त्री नहीं हो अनुभवी जहाँ प्रौढ बेलाग॥
गुरुवर! इस जग में कहाँ रहे हम सावधान।
रखना सदैव राज की सेवा में निज ध्यान॥

(३८)

प्राणादपि को रम्यः कुलधर्मः साधुसंगश्च।
का संरक्ष्या कीर्तिः पतिव्रता नैजबुद्धिश्च॥

(३८)

प्राणों से भी अधिक क्या है गुरुजी! रमणीय।
सज्जन संगति कुलधर्म ये दो हैं कमनीय॥
हम किसकी रक्षा करें क्या हैं जग में सार।
पतिव्रता-यश-बुद्धि की रक्षा करो कुमार॥

(३९)

का कल्पलता लोके सच्छिष्यायार्पिता विद्या।
कोऽक्षयवटवृक्षः स्याद्विधिवत्सत्पात्रदत्तदानं यत्॥

(३९)

कल्पलता क्या? जो दिया है सुशिष्य को ज्ञान।
है अक्षय वटवृक्ष क्या? श्रेष्ठ पात्र को दान॥

(४०)

किं शस्त्रं सर्वेषां युक्तिर्माता च का धेनुः।
किं नु बलं यद्धैर्यं को मृत्युर्यदवधानरहितत्वम्॥

(४०)

शस्त्र कहो क्या जगत में? युक्ति बड़ा हथियार।
माता कौन? धेनु यहाँ, दुग्धामृत-भण्डार॥
सच्चा बल क्या? धैर्य है, मृत्यु क्या महाराज।
असावधानी मृत्यु है, प्रमाद तज, कर काज॥

(४१)

कुत्र विषं दुष्टजने किमिहाशौचं भवेदृणं नृणाम्।
किमभयमिह वैराग्यं भयमपि किं वित्तमेव सर्वेषाम्॥

(४१)

विष कहाँ है? दुष्ट में, सूतक? ऋण को जान।
अभय कौन? वैराग्य है, भय क्या? धन को मान॥

(४२)

का दुर्लभा नराणां हरिभक्तिः पातकञ्च किं हिंसा।
को हि भगवत्प्रियः स्याद्योऽन्यं नोद्वेजयेदनुद्विग्नः॥

(४२)

दुर्लभ क्या? हरिभक्ति है, कहो पाप क्या नाथ।
हिंसा करना पाप है, सदा बचाओ गात॥
प्रिय कौन भगवान को? कहिए आनन्द कन्द।
रहे चैन से खुद, करें दूजे को सानन्द॥

(४३)

कस्मात्सिद्धिस्तपसो बुद्धिः क्व भूसुरे कुतो बुद्धिः।
वृद्धोपसेवया के वृद्धाः ये च धर्मतत्वज्ञाः॥

(४३)

कैसे सिद्धि मिलती है? तप करने से प्राप्त।
बुद्धि किसमें रहती है? ब्राह्मण में जो आप्त॥
कैसे बुद्धि-विकास हो? वृद्धों का हो मान।
वृद्ध कौन? जिनको रहे, धर्मतत्त्व का ज्ञान॥

(४४)

संभावितस्य मरणादधिकं किं दुर्यशो भवति।
लोके सुखी भवेत्को धनवान्धनमपि च किं यतश्चेष्टम्॥

(४४)

प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए क्या है मृत्यु समान।
मरने से भी अधिकतर होता अपयश जान॥
कौन सुखी संसार में? सुखी यहाँ धनवान।
धन क्या है? जिससे मिले, मनवाञ्छित सम्मान॥

(४५)

सर्वसुखानां बीजं किं पुण्यं दुःखमपि कुतः पापात्।
कस्यैश्वर्यं यः किल शङ्करमाराधयेद् भक्त्या॥

(४५)

सकल सुखों का मूल क्या? पुण्य सुखों का मूल।
दुःख कहाँ से? पाप से आते हैं मत भूल॥
सभी ठाठ किस को मिलें, जो हो हर का भक्त।
जिसका श्रद्धा-प्रेम से रहे हृदय आसक्त॥

(४६)

को वर्धते विनीतः को वा हीयेत यो दृप्तः।
को न प्रत्येतव्यो ब्रूते यश्चानृतं शश्वत्॥

(४६)

कौन बढ़े? जो नम्र हो, अहंकार से दूर।
किसका होता पतन? जो, रहे घमंड में चूर॥
किसका करना चाहिए नहीं ईश! विश्वास?
जो मिथ्या बोले सदा, करे व्यर्थ बकवास॥

(४७)

कुत्रानृतेऽप्यपापं यच्चोक्तं धर्मरक्षार्थम्।
को धर्मोऽभिमतो यः शिष्टानां निजकुलीनानाम्॥

(४७)

झूठ बोलने में कहाँ ना लगता है पाप?
जहाँ सुरक्षा धर्म की, होता हो इन्साफ॥
धर्म किसे कहते प्रभो! सुनो धर्म का सार।
शिष्ट कुलीन करें सदा जो जग में आचार॥

(४८)

साधुबलं किं दैवं कः साधुः सर्वदा तुष्टः।
दैवं किं यत्सुकृतं कः सुकृती श्लाघ्यते यः सद्भिः॥

(४८)

सज्जन का बल कौन है? "दैव" साधुबल जान।
साधु कौन? सन्तुष्ट जो रहे सदा इन्सान॥
दैव क्या है? किए हुए पुण्यकर्म महान।
कौन सुकृती? सुधी मनुज गाएँ जिसका गान॥

(४९)

गृहमेधिनश्च मित्रं किं भार्या को गृही च यो यजते।
को यज्ञो यः श्रुत्या विहितः श्रेयस्करो नृणाम्॥

(४९)

कौन मित्र गृहस्थी का? पत्नी होती खास।
कौन गृहस्थी है सही? करता यज्ञ सुवास॥
यज्ञ किसे कहते प्रभो? वेद विहित शुभ कर्म।
प्राणिमात्र का हो भला, परम धर्म का मर्म॥

(५०)

कस्य क्रिया हि सफला यः पुनराचारवान् शिष्टः।
कः शिष्टो यो वेदप्रमाणवान्को हतः क्रियाभ्रष्टः॥

(५०)

फलीभूत उद्योग हो किसका कृपानिधान।
उस मनुष्य का शिष्ट जो सुसभ्य चरित्रवान।
कौन शिष्ट? जो वेद का माने सही प्रमाण।
जीवित ही मृत कौन है? कर्मपतित इन्सान॥

(५१)

को धन्यः? संन्यासी, को मान्य? पण्डितः साधुः।
कः सेव्यो? यो दाता, को दाता? योऽर्थितृप्तिमातनुते॥

(५१)

धन्य कौन है विश्व में? संन्यासी है धन्य।
मान्य कौन? गुरुवर्य हे! पण्डित साधु सुगण्य॥
सेवा किसकी हम करें? जो दाता सुमहान।
दाता कौन? सुपात्र को जो खुलकर दे दान॥

(५२)

किं भाग्यं देहवतामारोग्यं कः फली कृषिकृत्।
कस्य न पापं जपतः कः पूर्णो यः प्रजावान् स्यात्॥

(५२)

देहवान का भाग्य क्या? रहे सदा ही स्वस्थ।
फल किसको मिलता यहाँ? जो हो कृषि में मस्त॥
पाप किसे लगता नहीं? जो करते हरि-गान।
पूर्ण कौन? जिनके यहाँ हो योग्य सन्तान॥

(५३)

किं दुष्करं नराणां यन्मनसो निग्रहः सततम्।
को ब्रह्मचर्यवान्स्याद्यश्चास्खलितोर्ध्वरेतस्कः॥

(५३)

दुष्कर क्या? मन रोकना, यह है अति बलवान।
ब्रह्मचारी किसे कहें? स्खलित न हो इन्सान॥

(५४)

का च परदेवतोक्ता चिच्छक्तिः को जगद्भर्ता।
सूर्यः सर्वेषां को जीवनहेतुः स पर्जन्यः॥

(५४)

श्रेष्ठ देवता कौन है? चिदानन्द भगवान।
जग का पालक कौन है? सूर्यदेव को जान॥
जीवन का कारण कहो कौन जगत में नाथ।
वर्षा जीवन हेतु है, मिलें अन्न फल पात॥

(५५)

कः शूरो यो भीतत्राता, त्राता च कः स गुरुः।

को हि जगद्गुरुरुक्तः शंभुर्ज्ञानं कुतः शिवादेव॥

(५५)

शूर कौन? भयभीत का रक्षक हो जो वीर।
रक्षक कौन है? सद्गुरु मेटे सारी पीर॥
जगद्गुरु यहाँ कौन है? श्री शङ्कर भगवान।
ज्ञान किसके समीप है? शिव समीप है ज्ञान॥

(५६)

मुक्तिं लभते कस्मान्मुकुन्दभक्तेर्मुकुन्दः कः।

यस्तारयेदविद्यां का चाविद्या यदात्मनोऽस्फूर्तिः॥

(५६)

गुरुवर्य! मुक्ति कौन दे? मुकुन्दभक्ति कुमार।
मुकुन्द कौन? उतार दे अविद्यान्ध से पार॥
कहो, अविद्या क्या प्रभो! आत्मा का अज्ञान।
रहा सदा से ही सुनो! अज्ञान दुःख-खान॥

(५७)

कस्य न शोको यः स्यादक्रोधः किं सुखं तुष्टिः।

को राजा रञ्जनकृत् कश्च श्वा नीचसेवको यः स्यात्॥

(५७)

शोक किसे होता नहीं? अक्रोधी को जान।
सुख क्या है? सन्तोष है, तृष्णा दुःख महान॥
भूप कौन हैं? जो करे जनता को खुशहाल।
श्वान कौन? जो नीच की सेवा करे छिनाल॥

(५८)

को मायी परमेशः क इन्द्रजालायते प्रपञ्चोऽयम्।

कः स्वप्ननिभो जाग्रद् व्यवहारः सत्यमपि च किं ब्रह्म॥

(५८)

मायापति है कौन जी? बस परमेश्वर एक।
इन्द्रजाल है क्या प्रभो! जगप्रपञ्च है देख॥
जगमें स्वप्न समान क्या? जाग्रत का व्यवहार।
सत्य क्या? एक ब्रह्म है और सभी निस्सार॥

(५९)

किं मिथ्या यद्विद्यानाश्यं तुच्छं शशविषाणादि।
का चानिर्वचनीया माया किं कल्पितं द्वैतम्॥

(५९)

मिथ्या क्या है? ज्ञान से जो हो जाए भंग।
जैसे हैं खरगोश के सिर से जाते शृंग॥
जिसका वर्णन हो नहीं क्या है? मायाजाल।
कल्पित क्या है? द्वैत है, समझ तत्त्व तत्काल॥

(६०)

किं पारमार्थिकं स्यादद्वैतं चाज्ञता कुतोऽनादिः।
वपुश्च पोषकं किं प्रारब्धं चान्नदायि किं चायुः॥

(६०)

सत्य कौन? अद्वैत है, भेदभाव को त्याग।
कब से है यह अज्ञता? अनादि युग से जाग॥
क्या पोषक है गात्र का? प्रारब्ध सुधी जान।
दाता कौन अनाज का? आयु को ही मान॥

(६१)

को ब्राह्मणैरुपास्यो गायत्र्यर्काग्निगोचरः शंभुः।
गायत्र्यामादित्ये चाग्नौ शंभौ च किं नु तत्तत्त्वम्॥

(६१)

किसकी करे उपासना ब्राह्मण हे श्रीमान।
अग्नि रवि गायत्री की शंभु की धर ध्यान॥
गायत्री रवि अग्नि शिव शून्य में क्या खास?
परम तत्त्व वह ब्रह्म ही, करता इनमें वास॥

(६२)

प्रत्यक्षदेवता का माता पूज्यो गुरुश्च कस्तातः।

कः सर्वदेवतात्मा विद्याकर्मान्वितो विप्रः॥

(६२)

कौन प्रत्यक्ष देवता? माता है ना और।

पूजनीय गुरु कौन हैं? पिता सुनो कर गौर॥

सब देवों का रूप है कौन जगत में नाथ।

ज्ञान कर्म से युक्त है विप्र झुकाओ माथ॥

(६३)

कश्च कुलक्षयहेतुः संतापः सज्जनेषु योऽकारि।

केषाममोघवचनं ये च पुनः सत्यमौनशमशीलाः॥

(६३)

किस कारण से हे विभो! होता है कुलनाश?

श्रेष्ठजनों को दुःख दें, वे जाते बे-आश॥

किनके वचन अमोघ हैं? कहिए कृपानिधान।

सत्य-मौन-शम-शील-गुण जिनमें उनके जान॥

(६४)

किं जन्म विषयसंगः किमुत्तरं जन्म पुत्रः स्यात्।

कोऽपरिहार्यो मृत्युः कुत्र पदं विन्यसेच्च दृक्पूते॥

(६४)

जन्म किसे कहते प्रभो? है विषयों का संग।

जन्मोत्तर क्या? पुत्र है, चलती रहे तरंग॥

क्या टाली ना जा सके? मृत्यु अटल है जान।

कहाँ रखें पद? देखकर अच्छी प्रकार स्थान॥

(६५)

पात्रं किमन्नदाने क्षुधितं कोऽर्च्यो हि भगवदवतारः।

कश्च भगवान्महेशः शङ्करनारायणात्मैकः॥

(६५)

अन्नदान किसको करें? भूखे को दो दान।
कौन अर्चना योग्य है? हरि-अवतार महान॥
कहो कौन है हे गुरो! वह हरिहर भगवान।
हरिहर है एकात्म उस महादेव को जान॥

(६६)

फलमपि भगवद्भक्तेः किं तल्लोकस्वरूपसाक्षात्त्वम्।
मोक्षश्च को ह्यविद्यास्तमयः कः सर्ववेदभूरथ चोम्॥

(६६)

क्या फल भगवद्भक्ति का? देखे लोकस्वरूप।
मोक्ष? अविद्यानाश है अटें अन्ध के कूप॥
सब वेदों का आश्रय क्या है? कृपानिधान।
एक ओम् है ध्यान से करो उसी का गान॥

(६७)

इत्येषा कण्ठस्था प्रश्नोत्तररत्नमालिका येषाम्।
ते मुक्ताभरणा इव विमलाश्चाभान्ति सत्समाजेषु॥

(६७)

जिसके यह कण्ठस्थ है रत्नमाला सुधीर!
मोती निर्मलभाव के हो सुशोभित शरीर॥ ओ३म्॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यप्रणीता, हिन्दी-काव्यानुवादेनालङ्कृता प्रश्नोत्तररत्नमाला संपूर्णा।

प्रश्नोत्तररत्नावली सुन्दर गुण की खान।
काव्यमयी टीका करी हिन्दी में धर ध्यान॥
पढ़ो पढ़ाओ प्रेम से, समझो करो विचार।
ईश-कृपा से नाव हो भवसागर से पार॥
सेवक 'सांघीवाल' ने किया किञ्चित् प्रयास।
लाभान्वित हों बन्धु सब, मिले अनन्त प्रकाश॥

शमिति

अथ श्रीशङ्कराचार्यविरचिता

चर्पटपञ्जरिका

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे ॥ ध्रुवम् ॥

भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!

अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥ टेक॥

(१)

दिनमपि रजनी सायं प्रातः

शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।

कालः क्रीडति गच्छत्यायु

स्तदपि न मुञ्चत्याशावायुः ॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे ॥

सुबह-शाम दिन रात निरन्तर आते रहते हैं।
शिशिरवसन्तादिक भी चक्र चलाते रहते हैं।
काल खेलता रहता उमर घटाते रहते हैं।
आशा लालच वायु तुझे उड़ाते रहते हैं।

त्याग आशा तृष्णा मुक्ति-मार्ग अपना ले॥
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!
अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥

(२)

अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू

रात्रौ चिबुकसमर्पितजानुः।

करतलभिक्षा तरुतलवास

स्तदपि न मुञ्चत्याशापाशः॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥

आगे अग्नि पीछे सूरज शरीर तपाता है।
घुटनों में रख ठोडी सारी रात बिताता है।
तरु के नीचे शयन मांगकर रोटी खाता है।
फिर भी आशा के फन्दे में फँसता जाता है।

जाग जाग रे मूढमति! दिन सोने के ना ये॥
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!
अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥

(३)

यावद् वित्तोपार्जनसक्त

स्तावन्निजपरिवारो रक्तः।

पश्चाद्धावति जर्जरदेहे

वार्तां पृच्छति कोऽपि न गेहे॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥

जब तक द्रव्य कमाता सब सम्मान करते हैं।
बुढापे में परिजन भी अपमान करते हैं।
पौत्र करें उपहास पुत्र ना ध्यान करते हैं।
बिगड़ी में बस मदद एक भगवान करते हैं।

स्वार्थ का संसार बना क्यों मूढ मतवाले॥
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!
अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥

(४)

जटिलो मुण्डी लुञ्छितकेशः
काषायाम्बर बहुकृतवेषः।
पश्यन्नपि च न पश्यति लोको
ह्युदरनिमित्तं बहुकृतशोकः॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥

इस पेट के लिए कई-कई ढोंग बनाता है।
जटाजूट कभी मुण्डन तू वस्त्र रंगाता है।
आडम्बर छल कपट ईश को नहीं सुहाता है।
सर्वव्यापक अन्तर्यामी सब कुछ ज्ञाता है।
रहा देख पर नहीं देखता अज्ञानी अन्धे!
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!
अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥

(५)

भगवद्गीता किञ्चिदधीता
गङ्गाजललवकणिका पीता।
सकृदपि यस्य मुरारिसमर्चा
तस्य यमः किं कुरुते चर्चाम्॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥

जिसने ग्रहण किया कुछ भी गीता ज्ञान रे!
गङ्गाजल की एक बूंद का किया पान रे!
एक बार भी किया कृष्ण का अर्चनध्यान रे!
करे क्या यम उसकी चर्चा, सार जान रे!
अमर होते भक्त नहीं डरते मृत्यु से॥
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!
अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥

(६)

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं

दशनविहीनं जातं तुण्डम्।

वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं

तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम्॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥

पके बाल बिना दान्तों के मुखड़ा हुआ है।

तरह-तरह की व्याधियों से जकड़ा हुआ है।

लट्ठी लेकर चलता देह अकड़ा हुआ है।

हुई दुर्दशा खेल तन का बिगड़ा हुआ है।

फिर भी क्यों ना आशारूपी पिण्ड को छोड़े!

भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!

अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥

(७)

बालस्तावत्क्रीडासक्त

स्तरुणस्तावत्तरुणीरक्तः।

वृद्धस्तावच्चिन्तामग्नः

पारे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥

बचपन बीता खेलकूद में, आई जवानी।

रमणी संग रंगरागों में रमा रहा प्राणी।

वृद्धावस्था में भी चिन्तामग्न अज्ञानी।

पारब्रह्म से मिलने की तो कभी नहीं ठानी।

जीवनरत्न अमूल्य खो दिया व्यर्थ में तूने॥

भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!

अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥

(८)

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं
पुनरपि जननीजठरे शयनम्।
इह संसारे खलु दुस्तारे
कृपया पारे पाहि मुरारे॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥

जन्म-मरण के चक्र में तू मूर्ख! रहा फँसा।
गर्भकुम्भी नरक में तू बार-बार धँसा।
भवसागर से पार करो हर! हो गई दुर्दशा।
अन्तर्यामी तू ही स्वामी हृदय में बसा।
परम शुद्ध प्रबुद्ध ज्योति ब्रह्म की जगे॥
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!
अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥

(९)

पुनरपि रजनी पुनरपि दिवसः
पुनरपि पक्षः पुनरपि मासः।
पुनरप्ययनं पुनरपि वर्षं
तदपि न मुञ्चत्याशामर्षम्॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥

रात्रि-दिवस पक्ष-मास अयन आए हैं।
बार-बार वर्ष भी यों ही बिताए हैं।
आशा-ईर्ष्या आदिक मन में मूढ! समाए हैं।
भगवद्भक्ति ज्ञान कर्म शुभ सभी भुलाए हैं।
कृतकर्म ही आते हैं मनुष्य के आगे॥
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!
अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥

(१०)

वयसि गते कः कामविकारः
शुष्के नीरे कः कासारः।
नष्टे द्रव्ये कः परिवारो
ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥

आयु ढलने पर फिर कामविकार क्या है?
नीर सूखने पर फिर रे कासार क्या है?
धन के नष्ट होने पर परिवार क्या है?
तत्त्वज्ञान होने पर संसार क्या है?
मननशील मनुष्य है कुछ मनन करले॥
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!
अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥

(११)

नारीस्तनभरनाभिनिवेशं
मिथ्या मायामोहावेशम्।
एतन्मांसवसादिविकारं
मनसि विचारय बारम्बारम्॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥

उन्नत स्त्री के स्तनों में नाभिनिवेश में।
झूठा करता मोह-माया के आवेश में।
मांस-मेद विकार ये क्यों पड़ता क्लेश में।
बार-बार सोच ध्यान कर परमेश में।
विषयभोग-व्याधियों में लीन क्यों रहे॥
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!
अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥

(१२)

कस्त्वं कोऽयं कुत आयातः
का मे जननी को मे तातः।
इति परिभावय सर्वमसारं
विश्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचारम्॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥

कौन तू है? कौन मैं हूँ? कहाँ से आया?
कौन माता-पिता जिनसे जन्म है पाया?
किया नहीं चिन्तन तुझे छल रही माया।
स्वप्न के समान झूठा जगत बतलाया।
काट इसके बन्धन शक्ति मिली है तुझे॥
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!
अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥

(१३)

गेयं गीतानामसहस्त्रं
ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्त्रम्।
नेयं सज्जनसङ्गे चित्तं
देयं दीनजनाय वित्तम्॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥

विष्णुसहस्त्रनाम गीता नित्य गाया कर।
निरन्तर हरि का रे तू ध्यान लाया कर।
सज्जनो की संगति में समय बिताया कर।
दीनों को दे दान बन्दे! धर्म कमाया कर।
मानव जीवन पाकर कुछ परमार्थ चाहिए॥
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!
अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥

(१४)

यावज्जीवो निवसति देहे

कुशलं तावत्पृच्छति गेहे।

गतवती वायौ देहापाये

भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥

जब तक प्राण तन की बेल खूब फलती है।
कुशल पूछते तब तक परिजन गाड़ी चलती है।
निकल जाय जब जीव काया नहीं हिलती है।
पत्नी भी डरती तुझसे देह जलती है।
किये कर्म ही आते हैं इन्सान के आगे॥
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!
अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥

(१५)

सुखतः क्रीयते रामाभोगः

पश्चाद्धन्त शरीरे रोगः।

यद्यपि लोके मरणं शरणं

तदपि न मुञ्चति पापाचरणम्॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥

अङ्गना के संग रंगरास रचाया।
हुए तन में रोग फिर बहुत पछताया।
मर कर हर के दर पर जाना, नश्वर है काया।
फिर भी किङ्कर भजा न शङ्कर पाप कमाया।
भक्तिरूपी तरणी से भवसागर तर जाए॥
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!
अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥

(१६)

रथ्याचर्पटविरचितकन्थः

पुण्यापुण्यविवर्जितपन्थः।

नाहं न त्वं नायं लोक

स्तदपि किमर्थं क्रीयते शोकः॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥

गलियों के चीथड़ों की बनाली कन्था।
सोचा नहीं पुण्य और पाप का पन्था।
नहीं मैं, नहीं तू ना जगत की संस्था।
फिर भी किसलिए शोक करे तू भन्ता!

परमानन्द प्राप्त कर जन का तन पाके॥
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!
अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥

(१७)

कुरुते गङ्गासागरगमनं

व्रतपरिपालनमथवा दानम्।

ज्ञानविहीनः सर्वमतेन

मुक्तिं न भजति जन्म शतेन!

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे॥

चाहे गङ्गासागर जाकर खूब गोते ला।
परिपालन कर व्रत अथवा दान का।
ऋषियों ने एक मत से यही है कहा।
सौ जन्म मुक्ति हो ना ज्ञान के बिना।

बिना ज्ञान डूबे लुटिया मझधार में॥
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!
अन्त समय में डुकृञ् करणे काम नहीं दे॥

इति श्रीशङ्कराचार्यविरचिता हिन्दीपद्यानुवादेनालङ्कृता पञ्जरिका सम्पूर्णा।

अथ श्रीशङ्कराचार्यविरचिता

द्वादशपञ्जरिका

(१)

मूढ! जहीहि धनागमतृष्णां

कुरु सद्बुद्धिं मनसि वितृष्णाम्।

यल्लभसे निजकर्मोपात्तं

वित्तं तेन विनोदय चित्तम्।

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

(१)

छोड़ धन की तृष्णा मूढ! शुद्ध बुद्धि कर।

निजकर्म से जो मिल जाए उसमें चित्त धर।

सदा दुःख पाएँ असन्तोषी नर रे!

भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!

(२)

अर्थमनर्थं भावय नित्यं

नास्ति ततः सुखलेशः सत्यम्।

पुत्रादपि धनभाजां भीतिः

सर्वत्रैषा विहिता नीतिः।

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

(२)

अर्थ है अनर्थ इसमें सुख नहीं है।

पुत्र से भी रहता भय, बात सही है।

धनहेतु पितृहत्या करते पुत्र रे!

भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!

(३)

का ते कान्ता कस्ते पुत्रः
संसारोऽयमतीव विचित्रः।
कस्य त्वं कः कुत आयात
स्तत्त्वं चिन्तय यदिदं भ्रातः।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

(३)

कौन तेरी स्त्री? कौन तेरा पुत्र है?
समझकर चल जग-जाल विचित्र है।
सोच किसका कौन है तू? आया कहाँ से?
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!

(४)

मा कुरु धनजनयौवनगर्वं
हरति निमेषात्कालः सर्वम्।
मायामयमिदमखिलं हित्वा
ब्रह्मपदं त्वं प्रविश विदित्वा।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

(४)

धन जन यौवन का गर्व व्यर्थ है।
करे क्षण में काल नष्ट, सर्व व्यर्थ है।
मायाजाल तोड़ ब्रह्मलीन बन रे।
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे॥

(५)

कामं क्रोधं लोभं मोहं
त्यक्त्वात्मानं भावय कोऽहम्।
आत्मज्ञानविहीना मूढा
स्ते पच्यन्ते नरकनिगूढाः।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

(५)

काम क्रोध लोभ मोह त्याग रे बन्दे!
चिन्तन कर "कौन हूँ मैं" जाग रे बन्दे!
आत्मज्ञान विना मिलता घोर नरक रे!
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे॥

(६)

सुरमन्दिरतरुमूलनिवासः
शय्याभूतलमजिनं वासः।
सर्वपरिग्रहभोगत्यागः
कस्य सुखं न करोति विरागः।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

(६)

मन्दिर वृक्ष झोपड़ियों में रहना भला है।
मृगचर्म के वस्त्र, भू पर सोना भला है।
भोग-परिग्रह त्याग,. वैराग्य सुख दे रे!
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे॥

(७)

रात्रौ मित्रे पुत्रे बन्धौ
मा कुरु यत्नं विग्रहसन्धौ।
भव समचित्तः सर्वत्र त्वं
वाञ्छस्यचिराद्यदि विष्णुत्वम्।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

(७)

यदि हरि से मिलने की है इच्छा तेरी रे!
तज दे मित्र-शत्रु भेद, मेरा-मेरी रे!
सबको समान समझ मिटें द्वन्द्व रे!
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे॥

(८)

त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णु

व्यर्थं कुप्यसि सर्वसहिष्णुः।

सर्वस्मिन्नपि पश्यात्मानं

सर्वत्रोत्सृज भेदाज्ञानम्।

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

(८)

तुझ में मुझ में, सब में रहता हरि एक रे!
क्रोध व्यर्थ, बनकर सहनशील देख रे!
एक आत्मा जान सब में, तज भेद रे!
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!

(९)

प्राणायामं प्रत्याहारं

नित्यानित्यविवेकविचारम्।

जाप्यसमेतसमाधिविधानं

कुर्ववधानं महदवधानम्।

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

(९)

प्राणायाम प्रत्याहार नित्य-अनित्य को जान।
विधिपूर्वक स्मरण हरि का कर लगाकर ध्यान।
निश्चय महान यह, हो आनन्द रे।
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे॥

(१०)

नलिनीदलगतसलिलं तरलं

तदवज्जीवितमतिशयचपलम्।

विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं

लोकं शोकहतञ्च समस्तम्।

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

(१०)

कमलदल पर पड़ी बूंद ना रहती स्थिर है।
इसी तरह से जीवन बन्दे चञ्चल नश्वर है।
अहंकार-रोग-शोकग्रस्त जगत रे!
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे।

(११)

का तेऽष्टादशदेशे चिन्ता
वातुल तव किं नास्ति नियन्ता।
यस्त्वां हस्ते सुदृढनिबद्धं
बोधयति प्रभवादिविरुद्धम्।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

(११)

अठारह स्थानों की क्यों पगले! उठा रहा चिन्ता।
क्या यहाँ पर कोई तेरा नहीं नियन्ता।
आध्यात्मिक जो ज्ञान कराए उसकी शरण ले।
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे।

(१२)

गुरुचरणाम्बुजनिर्भरभक्तः
संसारादचिराद्भव मुक्तः।
सेन्द्रियमानसनियमादेवं
द्रक्ष्यसि निजहृदयस्थं देवम्।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

(१२)

गुरुचरणों का सेवक बनकर शीघ्र मुक्ति पा।
मन-इन्द्रिय वश में कर, हो दर्शन हरि का।
विराजमान है अन्दर तेरे परमानन्द रे।
भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे।

(१३)

द्वादशपञ्जरिकामय एषः

शिष्याणां कथितो ह्युपदेशः।

येषां चित्ते नैव विवेक

स्ते पच्यन्ते नरकमनेकम्।

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते!

(१३)

द्वादश-पञ्जरिका-उपदेश शिष्यों को दिया।

भोगें नरक जिनका ज्ञानशून्य है हिया।

जगा ले विवेक अन्दर मतिमन्द रे।

भज गोविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द रे!

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता हिन्दीपद्यानुवादेनालङ्कृता

द्वादशपञ्जरिका सम्पूर्णा।

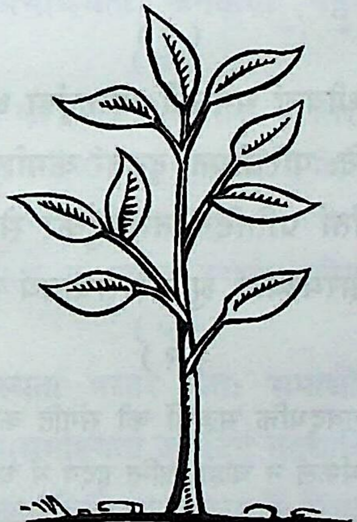

अथ श्रीशङ्कराचार्यविरचितं

साधनपञ्चकम्

(१)

वेदो नित्यमधीयतां तदुदितं कर्म स्वनुष्ठीयतां
तेनेशस्य विधीयतामपचितिः काम्ये मतिस्त्यजताम्।
पापौघः परिभूयतां भवमुखे दोषोऽनुसन्धीयता
मात्मेच्छा व्यवसीयतां निजगृहात्तूर्णं विनिर्गम्यताम्॥

(१)

पढ़ो वेद वेदों के अनुकूल ही चलो।
करो हरि की पूजा काम आदि से टलो।
संसार के दोष देखो आत्मज्ञान लो।
पाप नष्ट करो जल्दी घर से निकलो।

(२)

सङ्गः सत्सु विधीयतां भगवतो भक्तिर्दृढा धीयतां
शान्त्यादिः परिचीयतां दृढतरं कर्माशु सन्त्यज्यताम्।
सद्विद्वानुपसर्प्यतां प्रतिदिनं तत्पादुका सेव्यतां
ब्रह्मैकाक्षरमर्थ्यतां श्रुतिशिरोवाक्यं समाकर्ण्यताम्॥

(२)

भगवद्भक्ति सज्जनों की संगति करो।
कर्मफल न चाहो शान्ति हृदय में धरो।
विद्वानों से मिलो सेवा-शुश्रूषा करो।
वेद सुनो, ब्रह्म जानो, व्यर्थ क्यों फिरो।

(३)

वाक्यार्थश्च विचार्यतां श्रुतिशिरः पक्षः समाश्रीयतां

दुस्तर्कात्सुविरम्यतां श्रुतिमतस्तर्कोऽनुसन्धीयताम्।

ब्रह्मैवास्मि विभाव्यतामहरहर्गर्वः परित्यज्यतां

देहेऽहम्मतिरुज्झ्यतां बुधजनैर्वादः परित्यज्यताम्॥

(३)

महावाक्य समझो उनका आश्रय लो।

करो मत कुतर्क वेदमार्ग पर चलो।

"मैं भी ब्रह्म ही हूँ" जानो, गर्व से टलो।

'बड़ों से विवाद नहीं, अहम् से निकलो।

(४)

क्षुद्व्याधिश्च चिकित्स्यतां भिक्षौषधं भुज्यतां

स्वाद्वन्नं न तु याच्यतां विधिवशात्प्राप्तेन सन्त्युष्यताम्।

शीतोष्णादि विषह्यतां न तु वृथा वाक्यं समुच्चार्यता-

मौदासीन्यमभीप्स्यतां जनकृपा नैष्ठुर्यमुत्सृज्यताम्॥

(४)

भूख का इलाज भिक्षा सन्त के लिए।

स्वाद नहीं जो मिल जाए उसी से जिए।

सर्द गर्म सहिये व्यर्थ कुछ ना कहिए।

जनकृपा न चाहिए उदासीन रहिए।

(५)

एकान्ते सुखमास्यतां परतरे चेतः समाधीयतां

पूर्णात्मा सुसमीक्ष्यतां जगदिदं तद्वाधितं दृश्यताम्।

प्राक्कर्म प्रविलाप्यतां चितिबलान्नाप्युत्तरैः श्लिष्यतां

प्रारब्धं त्विह भुज्यतामथ परब्रह्मात्मना स्थीयताम्॥

(५)

हरि में लगाओ मन एकान्त में रहो।
पूर्णात्मा को देखो जग की बाधाएँ लहो।
सञ्चित कर्म नष्ट करो, नहीं लिप्त हो।
प्रारब्ध को यहीं भोगो, ब्रह्मलीन हो।

(६)

यः श्लोकपञ्चकमिदं पठते मनुष्यः
सञ्चिन्तयत्यनुदिनं स्थिरतामुपेत्य।
तस्याशु संसृतिदवानलतीव्रघोर-
तापः प्रशान्तिमुपयाति चितिप्रसादात्॥

(६)

जो मनुष्य इन पाँच श्लोकों को पढ़े।
मनन करे नित्य ब्रह्मज्ञान में बढ़े।
शान्त होते जग के सभी ताप जो चढ़े।
प्रभुकृपा से भर जाते हैं पाप के गढ़े॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता हिन्दीपद्यानुवादेनालङ्कृता
साधनपञ्चकं सम्पूर्णम्।

अथ श्रीशङ्कराचार्यप्रणीतं

कौपीनपञ्चकम्

(१)

वेदान्तवाक्येषु सदा रमन्तो
भिक्षान्नमात्रेण च तुष्टिमन्तः ।
अशोकवन्तः करुणैकवन्तः
कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ॥

(१)

वेदान्त के वाक्य सुनें सुनाएँ
भिक्षान्न से ही परितुष्टि पाएँ।
करें दया शोक घटा हटाएँ
कौपीन वाले सब भाग्यशाली ॥

(२)

मूलं तरोः केवलमाश्रयन्तः
पाणिद्वये भोक्तुममत्रयन्तः ।
कन्थामपि स्त्रीमिव कुत्सयन्तः
कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ॥

(२)

वृक्षों तले जो रहते महात्मा
खाएँ सदा भोजन हाथ में ले।
ना गूदड़ी भी जिनको सुहाती
कौपीन वाले सब भाग्यशाली ॥

(३)

देहाभिमानं परिहृत्य दूरा-
दात्मानमात्मन्यवलोकयन्तः ।
अहर्निशं ब्रह्मणि ये रमन्तः
कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ॥

(३)

देहाभिमानी ज्ञन जो नहीं हैं

देखें सदा अन्दर आत्मदीप्ति।

जो ब्रह्म में लीन रहें सदा ही

कौपीन वाले सब भाग्यशाली॥

(४)

स्वानन्दभावे परितुष्टिमन्तः

स्वशान्तसर्वेन्द्रियवृत्तिमन्तः।

नान्तं न मध्यं न बहिः स्मरन्तः

कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः॥

(४)

जो आत्म आनन्द निमग्न होते

हैं इन्द्रियाँ भी वश में जिन्हों के।

न अन्त ना मध्य न बाह्य सोचें

कौपीन वाले सब भाग्यशाली॥

(५)

पञ्चाक्षरं पावनमुच्चरन्तः

पतिं पशूनां हृदि भावयन्तः।

भिक्षासनो दिक्षु परिभ्रमन्तः

कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः॥

(५)

पवित्र पञ्चाक्षर मन्त्र को जो

जपें सदा ध्यान धरें उसी का।

हैं घूमते भिक्षुक जो धरा पे

कौपीन वाले सब भाग्यशाली॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं हिन्दीपद्यानुवादेनालङ्कृतं कौपीनपञ्चकं सम्पूर्णम्।

ओ३म्

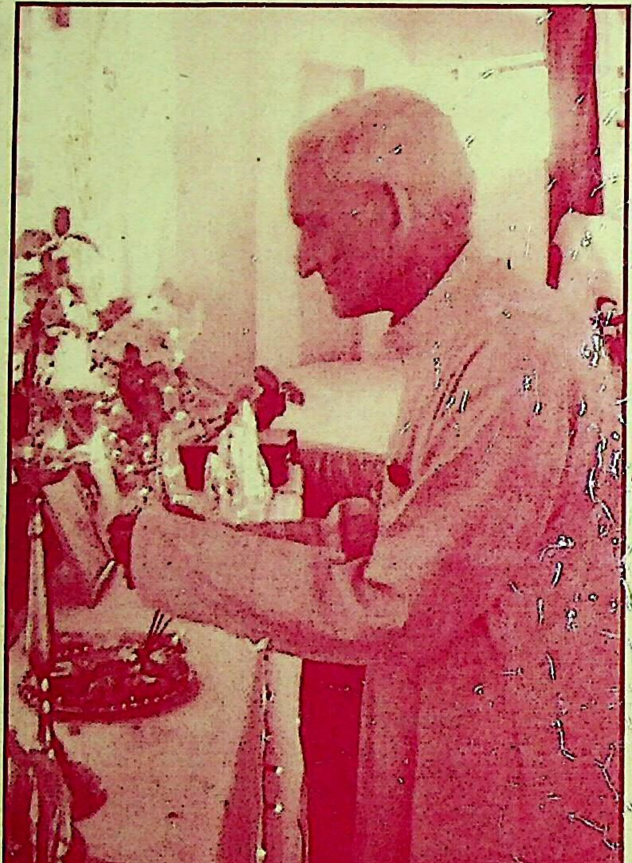

दिनांक २४-९-२००६ को अखिल भारतीय साहित्य परिषद् हिसार शाखा के वार्षिक अधिवेशन में ज्योति प्रज्वलित करते हुए अध्यक्ष श्री भारतभूषण सांघीवाल।